



04 - ब्रजमंडल : बाहरी यात्रा से अंतर्गत की परिक्रमा तक



05 - लोक कला, कला और अनंत लोक की यात्रा

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 25 जनवरी, 2026



इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित



06 - मां नर्मदा की सेवा में समर्पित एक सच्चे साधक-पर्यावरणविद्...



07 - सविधान, लोकतंत्र, राष्ट्र प्रेम और हिंदी सिनेमा

वर्ष 11 अंक 115, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रु. 2

# सुबह सबसे

subhasaverenews@gmail.com

facebook.com/subhasaverenews

www.subhasavere.news

twitter.com/subhasaverenews

## फाइनल रिहर्सल



उत्साह और उमंग से भरपूर रही गणतंत्र दिवस परेड की फुल ड्रेस फाइनल रिहर्सल..: फोटो प्रवीण वाजपेई

## वृद्धजनों की सेवा और ओल्ड एज होम की स्थापना के लिए सरकार ने समाज को साथ जोड़ा : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के अंतर्गत 54.52 लाख पेंशन हितग्राहियों को 327.15 करोड़ से अधिक राशि अंतरित

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि देश-प्रदेश में विकास का अर्थ केवल अधोसंरचना निर्माण नहीं है, विकसित राष्ट्र के लिए, समाज के सभी वर्गों को बेहतर और सुरक्षित जीवन जीने के अवसर उपलब्ध कराना भी विकास है और यह राज्य सरकार का सर्वोच्च दायित्व भी है। राज्य सरकार दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण और वृद्धजनों की सेवा के लिए संकल्पित है। राजधानी में वरिष्ठजनों को परिवार जैसा वातावरण देने के लिए सेवा भारती के माध्यम से इस सर्व-सुविधायुक्त सशुल्क वरिष्ठजन निवास की शुरुआत की गई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारी सरकार सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण के लिए हर कदम पर उनके साथ है। राज्य सरकार ने वृद्धजनों की सेवा और ओल्ड एज



होम की स्थापना के लिए समाज को साथ जोड़ा है। राज्य सरकार दिव्यांगजन को भी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से प्रोत्साहित कर उनमें क्षमताएं विकसित करने का प्रयास कर रही है। दिव्यांगजनों के पास अद्भुत बौद्धिक क्षमता होती है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव नव निर्मित सशुल्क वृद्धाश्रम संस्था छाया के लोकापण अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा पत्रकार कॉलोनी लिंक रोड नं. 3 पर निर्मित सर्व सुविधायुक्त वृद्धाश्रम में आयोजित

कार्यक्रम का मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पीपीपी मोड पर बने संस्था छाया ओल्ड एज होम का शुभारंभ कर अवलोकन भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यहां रह रहे एक दम्पति का अभिवादन कर स्वागत भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राज्यस्तरीय दिव्यांगजन स्पर्श मेला-2026 में प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए कलाकारों की प्रदर्शनी का अवलोकन किया। उन्होंने कलाकारों से संवाद कर उन्हें प्रोत्साहित भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना में 54.52 लाख से अधिक पेंशन हितग्राहियों को 327.15 करोड़ रुपये से अधिक राशि का सिंगल क्लिक से अंतरण किया।



## अमेरिकी टैरिफ से कपड़ा कारोबार को भारी नुकसान

● राहुल बोले-4.5 करोड़ नौकरियां दांव पर, मोदी जवाबदार

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने शुक्रवार को हरियाणा की एक कपड़ा फैक्ट्री का वीडियो अपने एक्स अकाउंट पर शेयर किया। राहुल ने हाल ही में फैक्ट्री का दौरा किया था। राहुल मजदूरों और अफसरों से बातचीत करते हैं। कपड़ा कारोबार में खुद भी हाथ आजमाते नजर आते हैं। राहुल ने पोस्ट में लिखा-अमेरिकी टैरिफ से देश के कपड़ा एक्सपोर्टर्स को भारी नुकसान हुआ है। 4.5 करोड़ से ज्यादा नौकरियां और लाखों कारोबार दांव पर हैं, लेकिन मोदी ने न तो कोई राहत दी है और न ही अमेरिकी टैरिफ पर कुछ कहा।



मोदी जी, आप जवाबदेह हैं। कृपया इस मुद्दे पर ध्यान दें। राहुल ने लिखा कि अमेरिका में 50 फीसदी टैरिफ और अनिश्चितता भारत कपड़ा एक्सपोर्टर्स को बुरी तरह नुकसान पहुंचा रही है। नौकरियां जा रही हैं, फैक्ट्रियां बंद हो रही हैं और ऑर्डर कम हो रहे हैं। यह हमारी 'डेड इकॉनॉमी' की सच्चाई है। राहुल कहा कि भारत के लिए यह बेहद जरूरी है कि अमेरिका के साथ ऐसा व्यापार समझौता किया जाए, जिसमें भारतीय कारोबार और मजदूरों के हित सबसे ऊपर रहें। उन्होंने यह भी कहा कि पीएम मोदी को अपनी कमजोरी का असर इकॉनॉमी पर और नहीं पड़ने देना चाहिए।

## मुझे जो कुछ कहना है पार्टी के अंदर कहूंगा

● राहुल गांधी से नाराजगी के दावों के बीच थरूर की टूट

तिरुवनंतपुरम/कोझिकोड (एजेंसी)। कांग्रेस के दिग्गज नेता शशि थरूर का राज्य प्रदेश कांग्रेस समिति की बैठक से गायब रहने पर केरल से दिल्ली तक हड़कंप मचा हुआ है। दावा किया जा रहा है कि शशि थरूर कोचि में राहुल गांधी के कार्यक्रम में प्रोटोकाल का पालन नहीं होने से नाराज हैं। इसीलिए वह पार्टी की एक अहम बैठक में नहीं गए थे। इससे राज्य के कार्यकर्ताओं में कांग्रेस की एकता को लेकर संदेह खड़ा हो रहा है। इस सब के बीच कोझिकोड पहुंचे शशि थरूर ने केन्द्रीय नेतृत्व के साथ विवाद पर बोलने और कुछ कहने से मना कर दिया। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने कहा कि



चिंताओं को सीधे पार्टी लीडरशिप तक पहुंचाना बेहतर है। मीडिया में कई बातें सामने आई हैं, जिनमें से कुछ सच हो सकती हैं और कुछ नहीं। थरूर ने कहा कि और ऐसे मामलों पर पब्लिक प्लेटफॉर्म पर चर्चा नहीं होनी चाहिए। मैंने पार्टी को पहले ही बता दिया था कि मैं प्रोग्राम में शामिल नहीं होऊंगा और मुझे जो कुछ भी कहना है, वह पार्टी के अंदर ही कहूंगा। उन्होंने यह भी कहा कि एर्नाकुलम विवाद के बारे में मुझे कुछ नहीं कहना है। मैं इस इवेंट में किताब लॉन्च करना चाहता था, लेकिन राजनीतिक कामों की वजह से जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में बुक लॉन्च टालना पड़ा। यही वजह है कि मैंने कोझिकोड में इस इवेंट में शामिल होने का फैसला किया। शशि थरूर का यह बयान ऐसे वक्त पर आया है जब यह जानकारी सामने आई है कि उन्हें कांग्रेस नेतृत्व ने मनाने की कोशिश की है।

● अमित शाह पहुंचे प्रेरणा स्थल, मिशन 2027 का किया शंखनाद

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में राष्ट्र प्रेरणा स्थल पर यूपी महोत्सव का आयोजन हो रहा है। कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में भाग लेने केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह लखनऊ पहुंचे। यूपी दिवस समारोह का आयोजन 24-26 जनवरी तक हो रहा है। यूपी दिवस समारोह का उद्घाटन अमित शाह ने किया। इससे पहले एयरपोर्ट पर सीएम योगी आदित्यनाथ, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी, डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य एवं ब्रजेश पाठक और अन्य नेताओं ने केन्द्रीय गृह मंत्री का



जोरदार स्वागत किया। इसके बाद अमित शाह राष्ट्र प्रेरणा स्थल पहुंचे। कार्यक्रम को लखनऊ में सुरक्षा के चाक-चौबंद इंतजाम किए गए। इस मौके पर अमित शाह ने एक जिला एक व्यंजन कार्यक्रम का भी शुभारंभ किया। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने जय श्री राम का जयकारा लगाकर अपने संबोधन की शुरुआत की। भारत माता की जय के नारे भी लगे। इस दौरान आवाज हल्की होने पर गृह मंत्री ने चुटकी ली। उन्होंने कहा कि मौसम भी खुल गया है। टंड कम हो गई है। आज यूपी दिवस का कार्यक्रम है। ऐसे में कमजोर आवाज से काम नहीं चलेगा। इसके

बाद जय श्री राम के जयकारे से पूरा कार्यक्रम पंखल गूंज उठा। इस मौके पर

मंत्री ने कहा कि यूपी में भी योगीजी ने प्रदेश को विकसित बनाने का संकल्प लिया है। 15 अगस्त 2047 को जब देश की आजादी की 100वीं वर्षगांठ मनाई जाएगी, तब यूपी विकसित बनेगा। विकसित भारत का अहम राज्य उत्तर प्रदेश है। हम आज इस संकल्प दोहराते हैं। यूपी भारत की धड़कन और आत्मा है। अब यह प्रदेश देश के विकास का इंजन भी बन रहा है। सीएम योगी ने यूपी दिवस के मौके पर पीएम के बधाई संदेश को पढ़ा। पीएम ने लिखा है कि आज उत्तर प्रदेश वन ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहा है।

## एक और छलांग लगाने की तैयारी में अपना इसरो!



नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन अंतरिक्ष विज्ञान की दुनिया में एक और छलांग लगाने की तैयारी कर रहा है। स्पेस एजेंसी ने अपनी अब तक की सबसे महत्वाकांक्षी परियोजना भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन की नींव रख दी है। भारतीय उद्योग जगत को साथ आने का न्योता दिया है। यह कदम भारत को उन चुनिंदा देशों की कतार में खड़ा कर देगा जिनके पास अंतरिक्ष में अपना स्थायी ठिकाना (स्टेशन) है। विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र ने भारतीय कंपनियों के लिए एक्सप्रेसन ऑफ इंटेंसिटी जारी किया है। इसके जरिए निजी क्षेत्र की कंपनियों को अंतरिक्ष स्टेशन के पहले मॉड्यूल, ईआर-01 के निर्माण के लिए आमंत्रित किया गया है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, पहले चरण की शुरुआत 2028

अंतरिक्ष में बनाएगा अपना स्पेस स्टेशन, शुरू किया काम



में होगी। इसमें अंतरिक्ष स्टेशन के पहले मॉड्यूल (ईआर-01) को लॉन्च करने का लक्ष्य रखा गया है। 2035 तक इसे पूर्ण कर लिया जाएगा। सभी 5 मॉड्यूल के साथ स्टेशन

पूरी तरह तैयार हो जाएगा। यह पृथ्वी की निचली कक्षा में लगभग 400-450 किमी की ऊंचाई पर स्थापित होगा। शुरुआत में यह 3-4 अंतरिक्ष यात्रियों को उड़ाने और वहां वैज्ञानिक प्रयोग करने में सक्षम होगा।

इसरो ने भारतीय कंपनियों के लिए कड़े मानक तय किए हैं, क्योंकि यह मॉड्यूल इंसानों के रहने योग्य होगा। प्रत्येक मॉड्यूल 3.8 मीटर व्यास और 8 मीटर ऊंचा होगा। इसका निर्माण उच्च शक्ति वाले एल्युमिनियम मिश्र धातु (ए-2219) से किया जाएगा। निर्माण में 0.5 मिलीमीटर की भी गलती स्वीकार्य नहीं होगी। कंपनियों को विशेष वेल्डिंग और फैब्रिकेशन तकनीक विकसित करनी होगी। इसरो ने स्पष्ट किया है कि यह पूरी तरह भारतीय प्रयास होगा। इसमें किसी भी विदेशी सहायता या आउटसोर्सिंग की अनुमति नहीं होगी। जो कंपनियां इस ऐतिहासिक प्रोजेक्ट का हिस्सा बनना चाहती हैं उनके लिए कुछ शर्तें रखी गई हैं।

## पीएम मोदी ने बांटे 61 हजार जॉब लेटर

● कहा-युवाओं को नए अवसर मिलें, ये हमारा प्रयास ● मोदी बोले-आज कई स्टार्टअप में महिला डायरेक्टर

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम मोदी ने शनिवार को वचुअली 18वें रोजगार मेले में युवाओं को 61 हजार जॉब लेटर बांटे। ये नियुक्ति गृह मंत्रालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, वित्तीय सेवा विभाग, उच्च शिक्षा विभाग सहित अन्य विभागों में की गई है। रोजगार मेले का आयोजन देश के 45 जगहों पर किया जा रहा है। पीएम ने वचुअली संबोधन में कहा कि युवाओं को नए अवसर मिलें, ये हमारा प्रयास है। देशभर के स्टार्टअप में महिलाएं आगे हैं। कई स्टार्टअप में तो वे हेड हैं। महिला स्वरोजगार की दर में 15 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। पिछला रोजगार मेला 24 अक्टूबर 2025 को आयोजित किया गया था। प्रधानमंत्री ने 22 अक्टूबर 2022 को रोजगार मेले का पहला फेज शुरू किया था। अब तक 11 लाख से ज्यादा लोगों को रोजगार मिल चुका है।

भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम का दायरा बढ़ा



सरकारी भर्तियों को भी कैसे मिशन मोड पर किया जाए इसलिफ रोजगार मेले की शुरुआत की गई। रोजगार मेला एक इंस्टीट्यूशन बन गया है। भारत की युवा शक्ति के लिए नए अवसर बने ये हमारा प्रयास है। हम कई ट्रेड एग्जिम्पेंट कर रहे हैं। इससे अनेकों अवसर आने वाले हैं। भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम का दायरा बढ़ रहा है। देश में दो लाख रजिस्टर्ड स्टार्टअप में 21 लाख युवा काम कर रहे हैं। भारत की इकोनॉमी तेजी से बढ़ रही है। आज भारत पर जिस तरह दुनिया का भरोसा बढ़ रहा है इससे अनेकों संभावनाएं पैदा हो रही हैं। 2025 में टू व्हीलर की बिक्री दो करोड़ के पार पहुंच गई। आयकर और जीएसटी कम होने से लाभ हुआ। देश में बड़ी संख्या में रोजगार का अवसर पैदा हो रहा है। आज 8000 से ज्यादा बेटियों को नियुक्ति पत्र मिले। महिला स्वरोजगार की दर में 15 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। आज कई स्टार्टअप में महिला डायरेक्टर हैं। गांवों के कई रोजगार में महिलाएं हेड कर रही हैं। आपको एक और बात याद रखनी है। तेजी से बदलते टेक के इस दौर में देश की प्राथमिकताएं बदल रही हैं। आपको खुद को लगातार अपग्रेड करना है। आईगॉट ऐप का उपयोग करें।

संघीयता के अंतर्गत देश में रेल लाइन पर धमाका हुआ है। शुक्रवार रात करीब नौ बजे सरहिंद रेलवे स्टेशन की एक आउटर लाइन पर इंजन के गुजरने के दौरान धमाका हुआ। देर रात करीब 11 बजे इसकी सूचना राजकीय रेलवे पुलिस को दी गई। हमले में एक लोको पायलट के घायल होने की भी सूचना है। जीआरपी ने इस संदर्भ में अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। जांच के दौरान पुलिस पुलिस और एफएसएल की टीम ने मौके से कुछ सबूत जुटाए हैं ताकि फॉरेंसिक जांच के बाद यह मालूम किया जा सके कि यह धमाका किसी आतंकी साजिश का हिस्सा था या नहीं। रोपड़ रेंज के डीआईजी नानक सिंह भी मौके पर पहुंचे हैं।

## पंजाब में गणतंत्र दिवस से पहले हुआ बड़ा धमाका

● सरहिंद में रेलवे की आउटर लाइन पर ब्लास्ट, सुरक्षा अधिकारी घायल

चंडीगढ़ (एजेंसी)। गणतंत्र दिवस से पहले पंजाब में रेल लाइन पर धमाका हुआ है। शुक्रवार रात करीब नौ बजे सरहिंद रेलवे स्टेशन की एक आउटर लाइन पर इंजन के गुजरने के दौरान धमाका हुआ। देर रात करीब 11 बजे इसकी सूचना राजकीय रेलवे पुलिस को दी गई। हमले में एक लोको पायलट के घायल होने की भी सूचना है। जीआरपी ने इस संदर्भ में अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। जांच के दौरान पुलिस पुलिस और एफएसएल की टीम ने मौके से कुछ सबूत जुटाए हैं ताकि फॉरेंसिक जांच के बाद यह मालूम किया जा सके कि यह धमाका किसी आतंकी साजिश का हिस्सा था या नहीं। रोपड़ रेंज के डीआईजी नानक सिंह भी मौके पर पहुंचे हैं।



## भारत से एक्स्ट्रा 25 फीसदी टैरिफ हटा सकता है अमेरिका

● वित्तमंत्री बोले-भारत ने रूस से तेल खरीद घटाई, ये अमेरिका की बड़ी जीत

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका के वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने कहा है कि डोनाल्ड ट्रम्प सरकार भारत पर लगाए गए 50 फीसदी टैरिफ में से आधा टैरिफ हटाने पर विचार कर सकती है। उन्होंने गुरुवार को अमेरिकी मीडिया वेबसाइट पॉलिटिको को दिए इंटरव्यू में कहा कि भारत ने रूस से कच्चा तेल खरीदना काफी कम कर दिया है, इसलिए टैरिफ में राहत देने की गुंजाइश बन रही है। बेसेंट ने इसे अमेरिका की बड़ी जीत बताया और कहा कि भारत पर लगाया गया 25 फीसदी टैरिफ काफी असरदार रहा है और इसकी वजह से भारत की रूसी तेल खरीद घट गई है। उन्होंने कहा कि टैरिफ अभी भी लागू है, लेकिन अब इन्हें हटाने का रास्ता निकल सकता है। अमेरिका ने अगस्त 2025 में भारत पर दो बार टैरिफ लगाया था। पहली बार 1 अगस्त को व्यापार घाटे को लेकर 25 फीसदी टैरिफ लगाया गया। इसके बाद 27 अगस्त को रूस से तेल खरीदने की वजह से एक बार और 25 फीसदी टैरिफ लगाया गया।

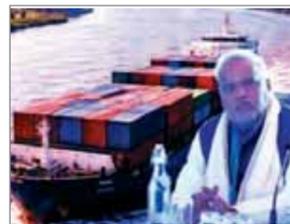
यूरोप भारत से तेल खरीद कर रूस की मदद कर रहा

बेसेंट ने यह भी कहा कि यूरोपीय देश भारत पर टैरिफ इसलिए नहीं लगा रहे हैं क्योंकि वे भारत के साथ बड़ा व्यापार समझौता करना चाहते हैं। साथ ही उन्होंने यूरोप पर आरोप लगाया कि वह भारत से रिफाइन तेल खरीदकर खुद ही रूस की मदद कर रहा है।

## बिहार में अब नदियों से बालू-सीमेंट की ढुलाई!

● सड़क और रेल से 3 गुना सस्ता, रोजगार के अवसर भी होंगे ● परिवहन मंत्री ने की 7 राष्ट्रीय जलमार्गों के विकास की घोषणा

पटना (एजेंसी)। बिहार में माल ढुलाई के क्षेत्र में एक बड़ा बदलाव होने जा रहा है। अब राज्य की सड़कों पर भारी ट्रकों का दबाव कम होगा क्योंकि गंगा, कोसी, गंडक और सोन जैसी प्रमुख नदियों का इस्तेमाल कमर्शियल रूट के तौर पर किया जाएगा। केरल के कोच्चि में हुए इनलैंड वाटरवेज डेवलपमेंट कार्डिनल की बैठक में परिवहन मंत्री श्रवण कुमार ने बिहार के 7 राष्ट्रीय जलमार्गों के विकास का रोडमैप पेश किया। उन्होंने बताया कि जलमार्ग न केवल सस्ता है, बल्कि



पर्यावरण के अनुकूल भी है। इस योजना के तहत नदियों के किनारे उद्योग और आधुनिक टर्मिनल विकसित किए जाएंगे, जो बिहार को सीधे वैश्विक व्यापार और पड़ोसी देश नेपाल से जोड़ेंगे। परिवहन मंत्री के अनुसार, जलमार्ग से माल ढुलाई की लागत मात्र 1.3 रुपये प्रति टन किलोमीटर है, जो सड़क मार्ग (3.62 रुपये) और रेल (2.41 रुपये) की तुलना में बेहद कम है। भारी सामग्री जैसे बालू, सीमेंट और स्टोन चिप्स की जहाज से ढुलाई होने पर 40 फीसदी तक बॉझ कम हो जाएगा।

## भारी जल संकट झेल रही दुनिया की आधी आबादी

● दिल्ली-मुंबई और बेंगलुरु में पानी की कमी, चेन्नई सूखे की कगार पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूनाइटेड नेशंस की नई रिपोर्ट में बताया गया कि दुनिया में आधी आबादी यानी करीब 4 अरब लोग जल संकट से जूझ रहे हैं। रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि दुनिया के 100 सबसे बड़े शहरों में आधे शहरों को गंभीर पानी की कमी का सामना करना पड़ रहा है। इनमें दिल्ली, बीजिंग, न्यूयॉर्क और रियो जैसे बड़े शहर शामिल हैं। रिपोर्ट के अनुसार, 39 शहरों में स्थिति बेहद गंभीर है। रिपोर्ट में दिल्ली चौथे स्थान पर है। कोलकाता



9वें, मुंबई 12वें, बेंगलुरु 24वें और चेन्नई 29वें स्थान पर हैं। इसके अलावा हैदराबाद, अहमदाबाद, सूरत और पुणे भी लंबे समय से पानी की कमी झेल रहे हैं। अफगानिस्तान की राजधानी काबुल पहला आधुनिक शहर बन सकता है जहां पानी पूरी तरह खत्म हो जाए। मैक्सिको सिटी हर साल करीब 20

शरद स्मृति व्याख्यान मानस भवन में 30 जनवरी को

भोपाल। अर्चना प्रकाशन न्यास भोपाल के तत्वावधान में 30 जनवरी शुक्रवार को श्यामला हिल्स स्थित मानस भवन में शरद स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया गया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अ.भा. सह प्रचारक प्रमुख अरुण जैन मुख्य वक्ता होंगे। संघ के प्रांत चालक अशोक पांडेय कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे। स्मृतिशेष शरद चंद्र मेहरोत्रा अर्चना प्रकाशन न्यास के संस्थापक हैं। उनकी पुण्यतिथि पर न्यास द्वारा यह आयोजन किया जा रहा है। न्यास के प्रबंध न्यासी राकेश जैन ने बताया कि इस अवसर पर तीन पुस्तकों तथा वार्षिक स्मारिका का लोकार्पण भी किया जाएगा। लेखक डॉ विकास देवे की पुस्तक भारत का जय घोष वंदे मातरम, लेखक पहला आधुनिक शहर बन सकता है जहां पानी पूरी तरह खत्म हो जाए। मैक्सिको सिटी हर साल करीब 20

इंच की दर से धंस रही है क्योंकि भूमिगत जल अधिक उपयोग किया जा रहा है। अमेरिका के दक्षिण-पश्चिमी राज्यों में पानी को लेकर विवाद चल रहा है।

## इंदौर अर्थ मूवर्स एकता संघ की तिरंगा यात्रा 26 जनवरी को

101 अर्थ मूवर्स के साथ निकालेंगे यह अनोखी यात्रा

इंदौर। 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के अवसर पर इंदौर अर्थ मूवर्स एकता संघ द्वारा शहर में एक अनूठा आयोजन किया जा रहा है। इस आयोजन के तहत संघ द्वारा 101 अर्थ मूवर्स मशीनों के साथ तिरंगा यात्रा निकाली जाएगी। संघ के अध्यक्ष विशाल जायसवाल ने बताया कि यह यात्रा गांधी नगर मेट्रो चौराहे से प्रारंभ हो कर पितृ पर्वत तक जाएगी। 26 जनवरी 2026 को प्रातः 11 बजे आयोजित इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महापौर पुष्पमित्र भार्गव होंगे। भार्गव अर्थ मूवर्स मशीनों की तिरंगा यात्रा को हरी झंडी दिखा कर खाना करेंगे। संघ के सचिव ब्रजकिशोर यादव ने बताया कि इस अवसर पर विभिन्न स्कूलों के छात्र-छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति भी दी जाएगी। साथ ही स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों और शहीदों के परिजनों का सम्मान भी किया जाएगा। संघ के उपाध्यक्ष आनन्द सिंह कछवाह ने बताया कि 101 अर्थ मूवर्स मशीनों की यह तिरंगा यात्रा वर्ल्ड रिकार्ड बुक ऑफ एक्सलेंस में भी दर्ज कराई जाएगी। आपने आगे बताया कि अर्थ मूवर्स मशीन संचालकों द्वारा शहर के विकास में अपना निरंतर सहयोग प्रदान किया जा रहा है और मशीनों के माध्यम से तेजी से निर्माण कार्य करने के साथ ही स्वच्छता के कार्य में भी अपना अहम योगदान दिया जा रहा है। संघ के सलाहकार मनोज शर्मा, विशाल पाटीदार, और संतोष दीवान, सुरेश जायसवाल ने संस्था द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए शहर की जनता से अनुरोध किया है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाएं। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने वाले विद्यालय हैं मप्र टूटिहीन कल्याण संघ इंदौर, गरिमा विद्या विहार सीनियर सेकंडरी स्कूल और आइडियल इंटरनेशनल सीबीएससी स्कूल।

### भारत उदय पर वैचारिक मंथन का महाकुंभ

इंदौर। विश्व संवाद केन्द्र मालवा के वार्षिक साहित्योत्सव नर्मदा साहित्य मंथन के पंचम सोपान का आयोजन 30 जनवरी से 1 फरवरी 2026 तक इंदौर में किया जाएगा। ७०% भारत उदय% की भावना को केन्द्र में रखकर होने वाला यह साहित्यिक समागम समाज के विविध आयामों पर वैचारिक मंथन और सांस्कृतिक जागरण का मंच बनेगा। इस सोपान में 'अहिल्या पर्व' के अंतर्गत मालवा की ऐतिहासिक धरोहर, भारतीय ज्ञान परंपरा और सांस्कृतिक विरासत पर विशेष चर्चा होगी। उद्घाटन सत्र में केरल के राज्यपाल राजेंद्र आलेंकर 'भारत उदय का आधार स्वबोध' विषय पर व्याख्यान देंगे। तीन दिनों तक साहित्य, संस्कृति, मीडिया, सिनेमा, भू-राजनीति, महिला नेतृत्व और आंतरिक चुनौतियों जैसे विषयों पर प्रबोधन सत्र आयोजित होंगे। कार्यक्रम में नृत्यनाटिका, कवि सम्मेलन, पुस्तक मेला और भारत-उदय पर आधारित प्रदर्शनी भी आकर्षण का केंद्र रहेंगी।

### सांसद के सुरक्षाकर्मी ने पिस्टल तानी

इंदौर। एमजी रोड क्षेत्र में स्थित लोखंडे पुल के पास उस समय तनाव की स्थिति बन गई, जब हिंदू संगठन के कार्यकर्ताओं पर सांसद शंकर लालवानी की सुरक्षाकर्मी द्वारा पिस्टल तान दी गई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार डीआरपी लाइन लोखंडे के पास सिपाही अविनाश भदौरिया ने विवाद के दौरान पिस्टल निकालकर कार्यकर्ताओं की ओर तान दी, जिससे मौके पर हड़कंध मच गया। सूचना मिलते ही विरध पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे और स्थिति को नियंत्रित किया। पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए सिपाही अविनाश भदौरिया को हिरासत में ले लिया है। मामले की जांच जारी है।

### भागीरथपुरा के एक और बुजुर्ग की मौत

इंदौर। शहर के भागीरथपुरा क्षेत्र में दूषित पानी से होने वाली मौतों का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। शुक्रवार को उल्टी-दस्त की शिकायत के बाद भर्ती 63 वर्षीय बन्दी प्रसाद की उपचार के दौरान मौत हो गई। उन्हें 17 जनवरी को अरविंदो अस्पताल में भर्ती कराया गया था। बन्दी प्रसाद पहले से टीबी जैसी गंभीर बीमारी से भी पीड़ित थे। इस ताजा मौत के बाद भागीरथपुरा में दूषित पानी से जान गंवाने वालों की संख्या बढ़कर 26 हो गई है, जिससे क्षेत्र में दहशत और आक्रोश का माहौल है। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार, वर्तमान में अरविंदो अस्पताल में 10 मरीज भर्ती हैं, जिनमें से एक मरीज की हालत गंभीर होने पर उसे वेंटिलेटर पर रखा गया है। भर्ती मरीजों में से 8 लोग पहले से अन्य गंभीर बीमारियों से भी ग्रसित हैं, जिससे उपचार में जटिलताएं बढ़ रही हैं।

### ठीक होकर फिर गंभीर बीमार हुए

इंदौर। भागीरथपुरा में दूषित जल से बीमार लोग ठीक होने के बाद दो लोग फिर गंभीर स्थिति में पहुंच गए। ज्यादातर वे पीड़ित हैं, जो पहले से किसी न किसी बीमारी से जूझ रहे थे। 7 गंभीर मरीजों का इलाज जारी है। हाई ब्लड प्रेशर के 683 और डायबिटीज के 344 हाई-रिस्क मरीज सामने आए हैं। डॉ. बॉम्बे हॉस्पिटल में भर्ती 65 वर्षीय एकनाथ सूर्यवंशी की हालत सबसे गंभीर है। अब वे कोमा में हैं। डॉक्टरों का कहना है, मरीजों की वर्तमान गंभीर स्थिति का मुख्य कारण डायरिया नहीं, बल्कि पहले से मौजूद न्यूरोलॉजिकल और मल्टी सिस्टम बीमारियां हैं। डॉ. बॉम्बे हॉस्पिटल में भर्ती भागीरथपुरा निवासी 65 वर्षीय अनीता कुशवाहा भी सेंसरी मोटर पॉलीन्यूरोपैथी से पीड़ित हैं। उनकी हालत गंभीर है और उन्हें भी वेंटिलेटर सपोर्ट पर रखा है। इलाज के तहत प्लाज्मा फेरिसिस की प्रक्रिया की जा रही है और ट्रेकिंगरोस्टोमी की तैयारी है। पार्वती कौंडला (67) की हालत भी गंभीर है। उन्हें वेंटिलेटर सपोर्ट पर रखा है। वे बेहोश हैं और मल्टी ऑर्गन डिसफंक्शन सिंड्रोम व सेंसरी मोटर पॉलीन्यूरोपैथी से पीड़ित हैं। उनके मस्तिष्क में इन्फार्क्ट भी विकसित हुआ है।

### प्लॉट के नाम पर दो सैन्य अफसरों से ठगी

इंदौर। महू क्षेत्र में जमीन के नाम पर दो वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों से लाखों रुपये की धोखाधड़ी का सनसनीखेज मामला सामने आया है। एक कॉलोनाइजर ने प्रोजेक्ट में निवेश का झांसा देकर लेफ्टिनेंट कर्नल और कर्नल रैंक के अधिकारियों से 45 लाख रुपये ठेक लिए। लेकिन, न तो प्लॉट का कब्जा दिया और न रजिस्ट्री कराई। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ दो अलग-अलग प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। बड़गाँदा पुलिस के अनुसार, पहली एफआईआर लेफ्टिनेंट कर्नल हिमांशु सिंह, इंजीनियर रेजीमेंट लेह की शिकायत पर दर्ज की गई है। आरोपी मोहम्मद अनीस पिता उस्मान कुरैशी, निवासी किशनगंज ने बड़गाँदा ने 30 नवंबर 2021 को बेरछ रोड स्थित 'राया इस्टेट डेवलपमेंट' प्रोजेक्ट में प्लॉट नंबर-2 बेचने का सौदा किया था। अधिकारी ने आरोपी को 21 लाख 28 हजार रुपये का भुगतान किया, लेकिन लंबे समय तक इंतजार के बावजूद प्लॉट नहीं मिला। दूसरे मामले में कर्नल वरुण, कर्मांडिंग ऑफिसर नागपुर से 26 नवंबर 2021 को फार्म हाउस भूमि क्रमांक-1 के नाम पर 24 लाख 15 हजार रुपये बसूले गए। जांच में धोखाधड़ी की पुष्टि होने पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज किया है।

# 4.47 लाख वोटर्स के नाम कट गए, 57 हजार फिर अपने नाम जुड़वाने पहुंचे

## विधानसभा क्रमांक-3 के सबसे कम मतदाताओं ने आवेदन किए



विधानसभा में नए वोटर्स के नाम जोड़ने के लिए सबसे ज्यादा आवेदन आए। जबकि, 3 नंबर विधानसभा से सबसे कम आवेदन आए। 3 नंबर विधानसभा क्षेत्रफल और वार्ड संख्या के हिसाब से 10 वार्डों की है, इसके बावजूद यहां आवेदन कम आए।

### मुस्लिम वार्डों से आपत्तियां

इंदौर की सभी 9 विधानसभाओं में स्थित मुस्लिम बाहुल्य वार्डों में करीब 1 लाख से ज्यादा दावे-आपत्तियां मिली हैं। शहर कांग्रेस अध्यक्ष चिन्टू चौकसे ने आरोप लगाया कि मुस्लिम वोटर्स के नाम काटने के लिए भारतीय जनता पार्टी ने अपने कार्यकर्ताओं के माध्यम से आपत्तियां लगाई हैं। उदाहरण के तौर पर चंदन नगर क्षेत्र में आने वाले वार्ड क्रमांक 2 में एक बुध पर मात्र 600 मतदाता हैं उसमें ही 300 आपत्तियां लगाई गईं।

### 1.33 लाख मतदाताओं की सुनवाई

एसआईआर प्रक्रिया के दौरान नो धीपिंग थ्रेपी में आए 1.33 लाख मतदाताओं की विशेष सुनवाई की जा रही है। इनसे पहचान और निवास सत्यापन के

लिए आयोग द्वारा निर्धारित 11 प्रकार के दस्तावेजों में से कोई एक दस्तावेज लिया जा रहा है। यह सुनवाई 14 फरवरी तक चलेगी। 21 फरवरी को अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन किया जाएगा। दावा-आपत्ति प्रक्रिया खत्म होने के बाद किसी भी मतदाता से आपत्ति नहीं ली जाएगी। 21 फरवरी को अंतिम मतदाता सूची के प्रकाशन के बाद ही अब मतदाता सूची में नए नाम जोड़ने की प्रक्रिया होगी। जिले के 9 विधानसभा में कहां से कितने वोटर्स के नाम जोड़ने के आवेदन पहुंचे इसका ब्यौरा इस प्रकार है। 1 नंबर विधानसभा से 5,318, 2 नंबर विधानसभा से 7,880, 3 नंबर विधानसभा से सबसे कम लगभग 2956, 4 नंबर विधानसभा से 5,829, 5 नंबर विधानसभा से 9,255, 6 नंबर विधानसभा से 10,440, सांवर विधानसभा से 8,530, महू विधानसभा से 3,993, देपालपुर विधानसभा से 3,325 मतदाताओं ने अपने नाम फिर जोड़ने के लिए आवेदन किया है।

## वाउचर नहीं मिलने पर महिला ने नाजिर को जूता मारा, केस दर्ज

### फैमिली कोर्ट में हंगामा हुआ, मारपीट की, कागज फाड़े

इंदौर। संयोगितागंज स्थित कुटुंब (फैमिली) न्यायालय में शुक्रवार को उस समय हंगामे की स्थिति बन गई, जब कोर्ट में मौजूद एक नाजिर के सिर पर महिला ने जूता मार दिया। घटना के बाद नाजिर की शिकायत पर पुलिस ने महिला के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। संयोगितागंज थाना पुलिस के अनुसार राकेश कुमारी गुप्ता निवासी आनंद वैली ने थाने में शिकायत दर्ज कराई है। राकेश फैमिली कोर्ट में नायब नाजिर के पद पर पदस्थ हैं। राकेश गुप्ता ने बताया कि वे कोर्ट परिसर में अपनी सीट पर बैठकर शासकीय कार्य कर रहे थे। इस दौरान श्रद्धा सिंह पंवार पत्नी गजेन्द्र सिंह पंवार निवासी स्टाइस-3 स्क्रीम नंबर 103 उनकी टेबल पर पहुंचीं और अपने बाउचर भुगतान को लेकर सवाल करने लगीं। नाजिर के अनुसार उन्हीं महिला को बताया कि उनका बिल पहले रिजेक्ट हो गया था, जिसे पुनः जनरेट कर कोषालय भेज दिया गया है और 23 दिसंबर में भुगतान हो जाएगा।



गाली-गलौज की, नोटशीट फाड़ी- इस बात पर महिला अचानक गुस्सा हो गई। आरोप है कि उसने टेबल पर रखी नोटशीट और अन्य सरकारी दस्तावेज फाड़ दिए, साथ ही अपशब्द कहने लगी। विवाद बढ़ने पर महिला ने नाजिर के सिर पर जूता मार दिया। घटना के दौरान कोर्ट में मौजूद वकील और अन्य लोग बचाव के लिए आगे आए। इसके बावजूद महिला गाली-गलौज करती हुई कमरे से बाहर निकल गई।

पुलिस बुलाकर शिकायत- घटना की सूचना तत्काल पुलिस को दी गई। इसके बाद नाजिर राकेश गुप्ता ने संयोगितागंज थाने पहुंचकर महिला के खिलाफ शासकीय कार्य में बाधा, अभद्रता और मारपीट की शिकायत दर्ज कराई। अधिकारियों का कहना है कि कोर्ट परिसर में इस तरह की अव्यवस्था और शासकीय कार्य में बाधा को गंभीरता से लिया गया है।

# महू में भी भागीरथपुरा की तरह गंदे पानी का प्रकोप, 22 लोग बीमार

## दूषित पानी से पीलिया और टाइफाइड फैलने का खतरा बढ़ा



15 मौतों की पुष्टि हुई, जबकि स्थानीय लोगों का दावा है कि मृतकों की संख्या 26 तक पहुंची। मामला मध्यप्रदेश हाई कोर्ट में भी पहुंच चुका है। सरकार ने कोर्ट को बताया कि 51 ट्यूबवेल में ई-कोलाई बैक्टीरिया पाया गया। वहीं प्रशासन ने अब तक 21 प्रभावित परिवारों को 2-2 लाख रुपए का मुआवजा दिया।

जांच के लिए नमूने भेजे गए- सीएमएचओ के मार्गदर्शन में स्वास्थ्य विभाग की टीमों क्षेत्र में लगातार सक्रिय हैं। पेयजल के नमूने जांच के लिए भेजे गए हैं। प्रशासन ने लोगों से उबला हुआ या फिल्टर किया हुआ पानी पीने, खुले स्रोतों के पानी से बचने और किसी भी लक्षण पर तुरंत जांच कराने की अपील की है। स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है और जांच रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

## भागीरथपुरा में दूषित पानी की मौत पर आक्रोश, शव रख चक्काजाम

### स्वास्थ्य विभाग के आंकड़ों पर सवाल, प्रशासन-पार्षद का विरोध

इंदौर। भागीरथपुरा में दूषित पेयजल से मौत के मामलों को लेकर प्रशासन द्वारा जारी आंकड़ों पर सवाल उठाते हुए क्षेत्र में जबरदस्त बवाल देखने को मिला। बन्दीप्रसाद लिटोरिया की इलाज के दौरान हुई मौत के बाद स्वास्थ्य विभाग ने इसे केवल दूषित पानी से हुई मौत मानने से इनकार किया, जिस पर पीड़ित परिजनों और रहवासियों का गुस्सा फूट पड़ा। आक्रोशित परिजनों ने बन्दीप्रसाद का शव भागीरथपुरा पुल पर रखकर चक्काजाम कर दिया और प्रशासन व स्थानीय पार्षद के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। परिजनों का कहना है कि बन्दीप्रसाद पूरी तरह स्वस्थ थे और दूषित पानी पीने के बाद ही उनकी तबीयत बिगड़ी। स्वास्थ्य विभाग द्वारा अन्य बीमारियों को मौत का कारण बताया गलत और पीड़ितों को धोखा दिया है। रहवासियों ने बताया कि बन्दीप्रसाद के परिवार में इससे पहले भी कंचन नामक महिला की मौत दूषित पानी से हुई थी। अब परिवार में छोटे-छोटे बच्चे बच रहे हैं, जिनकी मदद आसपास के लोगों ने चंदा इकट्ठा कर की है, लेकिन प्रशासन और जनप्रतिनिधियों ने अब तक कोई ठोस सहायता नहीं दी। चक्काजाम के कारण पुलिस के दोनों ओर यातायात बाधित रहा। स्थिति को संभालने के लिए बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात किया गया और सुरक्षा के मद्देनजर रास्ते बंद किए गए। प्रदर्शन के दौरान पार्षद पर लापरवाही के आरोप लगाते हुए लोगों ने जवाबदेही तय करने की मांग की।

# जनजातीय विभाग में 2.98 करोड़ रू का घोटाला, ईओडब्ल्यू ने एफआईआर की

## झाबुआ के अफसरों ने नियोजित तरीके से नियमों का उल्लंघन किया

इंदौर। आर्थिक अपराध प्रकोष्ठ (ईओडब्ल्यू) इंदौर ने झाबुआ जिले में एक बड़े भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया। जनजातीय कार्य विभाग में पदस्थ रहे तत्कालीन अधिकारियों द्वारा सामग्री खरीदी के नाम पर करोड़ों रुपये का वारा-न्यारा करने का मामला सामने आया है। ईओडब्ल्यू ने जांच के बाद तत्कालीन सहायक आयुक्त सहित चार अधिकारियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की। विभाग को शिकायत मिली थी कि वर्ष 2013-14 से 2019-20 के बीच विभाग में नियमों को ताक पर रखकर सामग्री की खरीदी की गई। जांच में यह पुष्टि हुई कि अधिकारियों ने मिलीभगत कर सरकारी खजाने को 2,98,41,738 रुपये (2 करोड़ 98 लाख 41 हजार 738) की चपत लगाई है।

इन अधिकारियों पर एफआईआर- ईओडब्ल्यू की जांच में चार प्रमुख अधिकारियों की भूमिका संदिग्ध पाई गई। इनके खिलाफ मामला पंजीबद्ध किया गया है। वे हैं प्रशांत आर्य, तत्कालीन सहायक आयुक्त, जनजातीय कार्य विभाग, झाबुआ। भारत सिंह, तत्कालीन एपीएआईटीडीपी एवं सहायक परियोजना प्रशासक (आदिवासी विकास), झाबुआ। अयूब खान, तत्कालीन भंडार शाखा प्रभारी (लेखापाल) झाबुआ और राधेचंद्र सिसोदिया, तत्कालीन बजट शाखा प्रभारी, जनजातीय कार्य विभाग झाबुआ।

# सुरक्षा कारणों से 489 स्लीपर बसों में आग बचाव साधन नहीं, नोटिस जारी

## एक महीने में आरटीओ ने 'एफडीएसएस' लगाने के निर्देश दिए



तहत स्लीपर बसों में बस बॉडी कोड एआईएस-119 और एसआई-052 के प्रावधानों का सख्ती से पालन कराया जा रहा है। इस क्रम में जिले के सभी स्लीपर बस संचालकों और स्वामियों को नोटिस जारी कर सुरक्षा नियमों की जानकारी दी गई है।

### स्लीपर बसों के लिए सुरक्षा नियम

झाड़कर केबिन और यात्री केबिन के बीच पार्टीशन दरवाजा नहीं होना चाहिए। स्लीपर बर्थ के साथ किसी भी प्रकार का स्लाइडर या स्टोरेज पूरी तरह प्रतिबंधित होगा। 1 अक्टूबर 2023 के बाद निर्मित बसों में एफडीएसएस अनिवार्य। सभी बसों में कम से कम 10 किलो का ग्रीन जोन अग्निशमन यंत्र जरूरी है। बस की लंबाई के अनुसार 4 से 5 आपातकालीन द्वार अनिवार्य होंगे। वीएलडीटी, पैनिंक बटन और स्पीड गवर्नर चालू हालत में होना आवश्यक है। ज्वलनशील पदार्थों का परिवहन पूरी तरह प्रतिबंधित है। बस में फ्रस्ट-एड बॉक्स अनिवार्य है। नशे की हालत में वाहन चलाते हुए पूरी तरह प्रतिबंध होगा। केबिन के पास वाले पार्टीशन भी हटाए जाएंगे।

### लापरवाही बर्दाश्त नहीं

जांच के दौरान यह राहत की बात सामने आई कि इंदौर में पंजीकृत किसी भी स्लीपर बस में सीट के पास स्लाइडर नहीं पाए गए। वहीं जिन बसों में झाड़कर केबिन के पास पार्टीशन लगे थे, उन्हें भी हटाने पर बस संचालकों ने सहमति जताई। सभी स्लीपर बसों में 10 किलो क्षमता का ग्रीन जोन अग्निशमन यंत्र, पर्याप्त आपातकालीन द्वार, वीएलडीटी, पैनिंक बटन और स्पीड गवर्नर को चालू हालत में रखना अनिवार्य किया है। परिवहन विभाग ने स्पष्ट किया है कि यह अभियान अग्रे भी जारी रहेगा और यात्रियों की सुरक्षा से किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

## यात्रा वृत्तान्त

भावेश कानूनगो



सा ल बदल गया, पर मैं वही का वही हूँ। नए साल की शुरुआत मेरे लिए एक नई धार्मिक यात्रा का संदेश लेकर आई—श्रीकृष्ण की लीलास्थली ब्रजमंडल की यात्रा। यह यात्रा एक सामूहिक समूह के माध्यम से आयोजित थी, जिसका मुखे कोई पूर्व अनुभव नहीं था, इसलिए मन में अनेक शंकाएँ थीं। विशेषकर मेरे जैसे सुविधा-प्रिय व्यक्ति के लिए, स्लीपर बलास में वह भी कड़ाके की ठंड में यात्रा करना, एक बड़ी चुनौती थी। ऐसी यात्राओं की कठिनाई का अनुभव मैं पहले भी कर चुका था।

जनवरी की भीषण ठंड में हमारी यात्रा आरंभ हुई। रात्रि लगभग 1.30 बजे ट्रेन श्रीकृष्ण जी की जन्मभूमि पहुँची। स्टेशन पर उतरते ही सर्द हवा ने हमारा स्वागत किया। वहाँ से हम गिरिराज गोवर्धन की धर्मशाला पहुँचे। बाहर कई श्रद्धालु परिक्रमा की तैयारी में लगे थे। प्रातः होते ही मैंने सबसे पहले राधा रानी के गाँव बरसाना जाने का निश्चय किया।

बरसाना पहुँचते ही चारों ओर 'राधा-राधा' की गूँज सुनाई देने लगी। संकरी गलियों में रिक्शाओं और वाहनों की भीड़ थी। नगर के बीचों-बीच से गुजरते हुए हम राधा रानी के मंदिर पहुँचे। ऊँचाई पर स्थित मंदिर तक पहुँचने के लिए पैदल चढ़ाई करनी पड़ी। रास्ते में छोटे-छोटे बच्चे लोगों के मस्तक पर टीका लगाने को आतुर खड़े थे, कई के मस्तक पर राधा रानी के समान टीके सजे थे।

संकरी गलियों और सीढ़ियों से गुजरते हुए जब मंदिर में प्रवेश किया, तो जयकारों की गूँज मन को भीतर तक स्पर्श कर गई। ऊँची अटारी पर राधा रानी और श्रीकृष्ण का विग्रह विराजमान था। विशाल हाल में भक्तों की भारी भीड़ थी। किसी तरह विग्रह के समीप दर्शन हुए। पंडित जी मुस्कुराते हुए भक्तों को चुनरियाँ प्रदान कर रहे थे, मानो राधा रानी स्वयं अपने भक्तों पर कृपा बरसा रही हों।

भीड़ के दबाव में मैं बाहर प्रांगण में आकर दूर से ही विग्रह को निहारता रहा। कोई वीडियो कॉल पर अपनों को दर्शन करा रहा था, तो कोई इस क्षण को कैमरे में कैद कर रहा था। समय कब बीत गया, पता ही नहीं चला।

वहाँ से उतरते हुए हम कीर्ति मंदिर पहुँचे। मंदिर का समय समाप्त होने को था, इसलिए शीघ्रता में दर्शन किए। मंदिर की नकाशी और भव्यता मन को मोह लेती है। इसके बाद उन्हीं तंग गलियों, ट्रैफिक और भीड़ से गुजरते हुए हम पुनः गोवर्धन धाम लौट आए।

शाम को वृंदावन के दर्शन का कार्यक्रम था। सप्ताह के भीड़ के

# ब्रजमंडल : बाहरी यात्रा से अंतर्मन की परिक्रमा तक

जनवरी की भीषण ठंड में हमारी यात्रा आरंभ हुई। रात्रि लगभग 1:30 बजे ट्रेन श्रीकृष्ण जी की जन्मभूमि पहुँची। स्टेशन पर उतरते ही सर्द हवा ने हमारा स्वागत किया। वहाँ से हम गिरिराज गोवर्धन की धर्मशाला पहुँचे। बाहर कई श्रद्धालु परिक्रमा की तैयारी में लगे थे। प्रातः होते ही मैंने सबसे पहले राधा रानी के गाँव बरसाना जाने का निश्चय किया। बरसाना पहुँचते ही चारों ओर 'राधा-राधा' की गूँज सुनाई देने लगी। संकरी गलियों में रिक्शाओं और वाहनों की भीड़ थी। नगर के बीचों-बीच से गुजरते हुए हम राधा रानी के मंदिर पहुँचे। ऊँचाई पर स्थित मंदिर तक पहुँचने के लिए पैदल चढ़ाई करनी पड़ी। रास्ते में छोटे-छोटे बच्चे लोगों के मस्तक पर टीका लगाने को आतुर खड़े थे, कई के मस्तक पर राधा रानी के समान टीके सजे थे।

कारण वाहन बाहर ही रोकना पड़ा। रिक्शाओं से आगे बढ़ें। श्री प्रेमनांद बाबा की यात्रा देखने की इच्छा थी, पर पता चला कि आज यात्रा स्थगित है। फिर भी उन्हें देखने की चाह हमें उनके आश्रम तक ले गई, जहाँ तंग गलियों से होते हुए आश्रम केली कुंज में स्थापित श्रीजी के विग्रह के दर्शन हुए।

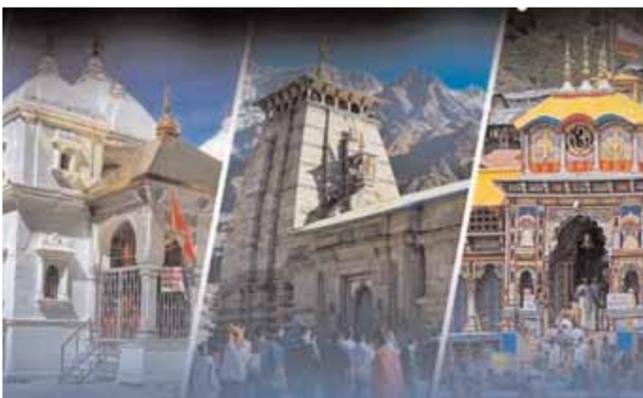
वहाँ से हम यमुना तट होते हुए निधिवन के लिए चल दिए। संध्या आरती का समय था। रास्ते में संकीर्तन करते भक्त, ढोलक और झाँझ की ध्वनि—सब मिलकर वातावरण को भक्तिमय बना रहे थे। निधिवन में प्रवेश करते ही परिवर्तन स्पष्ट दिखा। पहले जहाँ वृक्षों से आत्मीय संवाद सा अनुभव होता था, अब चारों ओर जालियाँ थीं। रास स्थली का वह स्वाभाविक सौंदर्य मानो सीमाओं में बँधी दिया गया हो।

नए मंदिरों की भरमार थी और मुख्य मंदिर पहचानना कठिन। दान की चर्चा अधिक प्रतीत हुई, जिससे मन में प्रश्न उठा कि क्या यही भक्ति का स्वरूप है।

वहाँ से निकलकर हम राधा रमण मंदिर पहुँचे। यहाँ भी धन और पहुँच के आधार पर दर्शन का अंतर स्पष्ट दिखा, जिससे मन को कुछ क्षुब्ध किया। इसके बाद बाँके बिहारी मंदिर पहुँचे। थोड़ी देर बाद पर्दा डाल दिया गया। कारण बताया गया कि भगवान किसी भक्त के साथ न चले जाएँ, इसलिए समय-समय पर पर्दा लगाया जाता है। मन में ये भाव आया जो

सर्वस्व व्याप्त है वो. कहा जा सकते हैं और कहा से आ सकते हैं। दर्शन कर हाथ जोड़ते हुए हम बाहर आ गए।

प्रेम मंदिर में अत्यधिक भीड़ थी। गर्भगृह से लेकर प्रांगण तक



श्रद्धालुओं का सैलाब था। यहाँ ऐसा लगा मानो दर्शन से अधिक यह स्थान एक दर्शनीय स्थल या फोटो-स्पॉट बन गया हो।

अगले दिन यात्रा का मुख्य उद्देश्य था—गोवर्धन परिक्रमा। इक्कीस किलोमीटर की इस परिक्रमा को नंगे पाँव पूर्ण करने का हमारा संकल्प था। दानघाटी से परिक्रमा आरंभ हुई। बच्चे, वृद्ध, साधु—सब अपने-

अपने भाव में लीन थे। कुछ दूरी तक गिरिराज के दर्शन नहीं हुए, पर भाव यही था कि हम उनकी परिक्रमा कर रहे हैं।

आगे बढ़ने पर गिरिराज गोवर्धन के प्रथम दर्शन हुए, मानो वे स्वयं भक्तों को अपनी ओर बुला रहे हों। कोई पैदल, कोई दंडवत, तो कोई रिक्शा से परिक्रमा कर रहा था। मिट्टी ऐसी लग रही थी, मानो मखमल पर चल रहे हों। रोड से शुरू हुई परिक्रमा तलहटी की ओर मुड़ गई। झाड़ियाँ, बंदर और नाम-जप करते श्रद्धालु—सब मिलकर वातावरण को आध्यात्मिक बना रहे थे।

गोविंद कुंड और अन्य स्थलों के दर्शन करते हुए हम राजस्थान सीमा में प्रवेश कर चुके थे, पर इसका एहसास तक नहीं हुआ। राधा कुंड में पूजा में लीन थे। थकान के बावजूद मन आगे बढ़ने को प्रेरित कर रहा था। अंततः मानसी गंगा पहुँचे, जहाँ रात्रि का भव्य श्रृंगार मन को शांति प्रदान कर गया।

यहाँ हमारी गिरिराज जी की परिक्रमा पूर्ण होने के साथ ब्रजमंडल यात्रा पूर्ण हुई। इस यात्रा ने भक्ति के अनेक रूप दिखाए—दंडवत करते श्रद्धालु, निस्पृह प्रकृति और भीड़ में लीन आस्थावान जन। यह यात्रा मेरे मन में एक गहरी और स्थायी अनुभूति छोड़ गई।

यह यात्रा केवल स्थलों के दर्शन तक सीमित नहीं रही, बल्कि आत्मचिंतन और अनुभूति की यात्रा बन गई। भीड़, अव्यवस्था और व्यावसायिकता के बीच भी भक्ति का वह शुद्ध रूप दिखाई दिया, जो नंगे पाँव परिक्रमा करते श्रद्धालुओं, नाम-जप में लीन साधकों और निस्पृह प्रकृति में बसता है। गोवर्धन की परिक्रमा के साथ ही मन की परिक्रमा भी पूर्ण हुई। इस यात्रा ने सिखाया कि सच्ची भक्ति मंदिरों की भव्यता में नहीं, बल्कि श्रद्धा, धैर्य और समर्पण में निवास करती है—और यही अनुभूति मेरे साथ लौट आई।

## वसंत पर कुछ वासंती कविताएँ



राजकुमार कुम्भज

### उधर वसंत

फुरसत नहीं है  
न तुम्हें, न मुझे, न वक्त को ही  
हम तीन हैं, तीनों ही जल्दी में हैं  
सब कुछ आधा-अधूरा इधर  
और उधर वसंत.

### नाचता वसंत

बिना पूछे आया  
आया संपूर्ण आया  
कमतर नहीं जरा भी  
फिर कौन हुआ कुरित  
ठहरा कौन, कब, कहाँ  
याद करता हूँ जीवन-संगीत  
या कि नाचता वसंत.

### चुप-चुप आया है वसंत

छत पर, मुँडेर पर  
घर-आँगन, दीवारों-सड़कों पर  
चुप-चुप आया है वसंत  
पुनः पुनः ताज़ा खबर जैसे  
दरारें दर्पण की फाँदते हुए  
कामना लिए मुक्त.

### अपना-सा वसंत

है सब कुछ है सरल  
खारिज हैं अफवाहें अफसोस  
पते-पते पर ओस-कण  
जन्म-जन्मांतर थोड़ा-थोड़ा  
अपना-सा वसंत.

### अशाफिर्याँ लुटाता है वसंत

उत्सव है जगह-जगह  
आनंद का अभिनंदन है बे-हिसाब  
नशा ही नशा है चारों तरफ  
अशाफिर्याँ लुटाता है वसंत  
बाकी बे-मतलब

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा ऑनलाइन पब्लिकेशन, 121, देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बाँबे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक

उमेश त्रिवेदी

कार्यकारी प्रधान संपादक

अजय बोकिल

संपादक (मध्यप्रदेश)

विनोद तिवारी

स्थानीय संपादक

हेमंत पाल

प्रबंध संपादक

रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,

Mobile No.: 09893032101

Email- subhasaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सम्बन्ध नहीं है।

# चुनौतियों का सकारात्मक पक्ष

## संघर्ष से सृजन

मेघा राठी

लेखक साहित्यकार हैं।



जी वन है तो कठिनाइयाँ भी होंगी और कठिनाइयाँ है तो उनका सामना भी करना ही होगा। जितना आसान यह कहना है उतना ही कठिन होता है यह करना लेकिन जीवित रहने के लिए इसके अतिरिक्त कोई दूसरा विकल्प भी नहीं है। कभी सहना भी पड़ता है तो कभी कहना भी होता है और सुनना भी पड़ता है लेकिन इन सबके मध्य सामंजस्य बिठा कर आगे बढ़ना महत्वपूर्ण होता है।

समय के अनुरूप खुद को ढाल लेना आवश्यक है। हर चोट, हर दुःख, हर पीड़ा समय आने पर याद आएगी ही लेकिन इन में उलझ कर ही बैठे रह गए तो समय तो व्यतीत हो जाएगा किंतु हाथ खाली ही रह जायेंगे और मन का असंतोष कृदा बढ़ा कर तन के साथ मन को भी बीमार कर उसे प्रदूषित कर देगा। यह प्रदूषित मन अपने आस डूबास के वातावरण और लोगों को भी कड़वाहट ही देगा। ऐसे व्यक्ति से लोगों का दूरी बना कर चलना स्वाभाविक है फिर शिकायत होगी कि हम अकेले रह गए।

वास्तव में यह सारा खेल मन का है और मन की लगातार कसना मस्तिष्क की क्षमता पर निर्भर करता है। मस्तिष्क की परिपक्वता ही मनुष्य को हर अनुकूल और विपरीत परिस्थिति का सामना करने की शक्ति देती है। यह सामना करने शक्ति हम कितने समय में सँजो पाते हैं, सारी बात यही पर आकर रुक जाती है।

यह आवश्यक नहीं कि हर व्यक्ति की क्षमता एक समान हो हो। पीड़ा सहने की प्रत्येक व्यक्ति की सीमा अलग होती है। जब पीड़ा उस सीमा के अतिम बिंदु तक



पहुँच जाती है उसके बाद ही उसमें सामना करने की हिम्मत आनी आरम्भ होने लगती है क्योंकि इस स्थिति में आने के बाद वह यह समझ चुका होता है कि या तो पलायन अथवा सामना, इसके अतिरिक्त उसके पास कोई रास्ता नहीं बचा। तब मस्तिष्क जाग्रत होने लगता है और समाधान के विषय में चिंतन करने लगता है।

चिंतन करने के बिंदु पर आते ही मनुष्य की इंद्रियाँ भी जाग्रत होने लगती हैं। इंद्रियों का जाग्रत होना मनुष्य को जीवित होने का अहसास करवाता है और फिर वह सक्रिय हो जाता है। वह यह समझने का प्रयास करने लगता है कि वास्तव में समस्या कितनी बड़ी है? क्या समस्या का समाधान आवश्यक है अथवा उसे अनदेखा कर आगे बढ़ा जा सकता है। इस स्थिति में आते ही मस्तिष्क सबसे पहले मन पर नियंत्रण करता है और समस्या के प्रकार पर विचार करने लगता है। तब उसे ज्ञात होता है कि समस्या वास्तव में थी या उसके मन ने किसी अनदेखा करने योग्य घटना अथवा बात को समस्या बना दिया। उसे विचार करने के बाद समझ आता है कि

उसका कितना समय इस समस्या पर नष्ट हुआ।

लेकिन यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि समय व्यर्थ नष्ट नहीं हुआ है यदि इसके बाद हमारी मनन करने की क्षमता बढ़ी और उससे हमें सामना करने शक्ति मिली हो तो। यह समय सीमा प्रत्येक व्यक्ति की अपनी इच्छाओं पर निर्भर करती है। किसी को अधिक समय लगता है तो किसी को कम। अतः बीते हुए समय पर प्रत्यापन न कर भविष्य को देखना श्रेयस्कर होगा। उस समय से हमें सकारात्मक रूप में क्या प्राप्त हुआ, इसे समझना आवश्यक होगा। आसान कुछ भी नहीं है यह समझ कर भावनात्मक स्थिति को नियंत्रण में रखकर मुस्कुरा सके तो आगे बढ़ना कठिन नहीं होगा। जीवन में हर संघर्ष हमें कुछ सिखाने आता है, यह हम पर निर्भर करता है कि हम क्या सीखते हैं। हो सकता है कि जो समस्या आज इतनी बड़ी लग रही है, कुछ समय बाद वह एक अवसर के रूप में दिखाई दे जिसने आपके भविष्य को निर्धारित करने में एक महत्वपूर्ण किरदार निभाया।

## बाल कहानी

लालबहादुर श्रीवास्तव

आ ज सुबह सुबह सहाना रजाई छोड़ दादा के पास आकर तुतलाती हुई बोली -दादा बधाई हो बधाई गणपत दिवस की बधाई।

सहाना तुम्हें भी बधाई।  
दादा, आज मैं भी आपके संग संग परेड ग्राऊंड में चलूंगी। अब मैं थोड़ी बड़ी हो गई हूँ। आप मुझे छोड़कर अकेले चले जाते हो।

हां तुम सच कहती हो। तुम हो ही इतनी छोटी तुम्हें वहाँ ले जाना थोड़ा कठिन है।

क्यों दादा ?  
तुम्हें गोदी में उठाकर ले जाना इतने समय तक गोदी में बैठना। फिर वहाँ बहुत समय भी लग जाता है। कभी कभी वहाँ कुरसी बैठने को नहीं मिलती। खड़े खड़े पूरा कार्यक्रम देखा जाता है।

सहाना तपाक से बोली -दादा तुम मुझे जल्दी से नो बजे के पहले लेकर जाना। हमें बैठने की जगह मिल जाएगी।

ठीक है सहाना तुम जल्दी से मम्मी के पास जाकर तैयार हो जाओ। मैं तुम्हें लेकर चलूँगी।

सहाना नन्हे कदमों से दूसरी मंजिल पर जा पहुँची।  
माँ! ओ माँ! क्या हुआ सहाना। माँ आज दादा के साथ परेड ग्राऊंड में जाना है। जल्दी से तैयार कर दो ना माँ।  
हां बेटा करती हूँ तुम्हारे लिए नाश्ता बना रही हूँ तब तक तुम दूध पी लो।

सहाना गट गट दूध पी गई। माँ ने नहला दुहला कर तैयार कर दिया। पापा सहाना के लिए सफेद कुर्ता पजामा सफेद टोपी तिरंगा रूफट्टा लेकर आए थे।

सहाना को माँ ने पहना दिए। सहाना फूलों सी खिली खिली

लग रही थी।

लो अब नाश्ता भी कर लो -माँ ने कहा। सहाना ने दादा को आवाज लगाकर नाश्ते के लिए ऊपर बुलवा लिया। दोनों ने नाश्ता किया।

चलो दादा, अब हम चलते हैं नो बजने में पंद्रह मिनट रह गये है। सहाना दादा की गोदी में चढ़ बैठी। घर के पास ही परेड ग्राऊंड था। कुछ ही समय में सहाना दादा के साथ परेड ग्राऊंड



जा पहुँची। पांडल आज गुब्बारों और रंग बिरंगी पत्रियों से सजा-धजा था। देशभक्ति के गीत बज रहे थे।

दादा! दादा! देखो कुरसी खाली है। अपने नन्हे हाथों से इशारा करते हुए सहाना ने दादा से कहा। दादा सहाना को लेकर बड़े आराम से बैठ गये। माँ से उद्घोषणा हुई -अब हमारे मंत्रीजी गणतंत्र पर्व पर तिरंगा फहराएँ। सहाना बोल पड़ी -दादा ये तो जय दादा की सुरिली आवाज लगती है। हाँ सहाना पर तुमने कैसे आवाज को पहचाना। अरे दादा आप भी डाक्टर जय दादा घर पर जब आते हैं तो अपने प्यारे अरफा को भी साथ लाते हैं उससे और मुझसे कितने प्यार से

बतियाते हैं और यहाँ भी कितनी मधुर वाणी में गणतंत्र पर्व का संचालन कर रहे हैं बस मैं इसी कारण से समझ गई ये डाक्टर जय दादा ही होने चाहिए।

मंत्रीजी मंच से नीचे उतरे। उन्होंने झंडे की जैसे ही डोर खींची प्यारा तिरंगा आसमां में लहरा उठा। देख सहाना दादा की गोद में उछल गई। जय गण मन की धुन जैसे ही बजने लगी दादा के साथ सबको खड़ा होते देख सहाना भी गोद

में खड़े होने का प्रयत्न जब करने लगी दादा समझ गये, सहाना भी तिरंगे को सम्मान देना चाहती है। सहाना को अपने हाथों से दादा ने खड़ा कर दिया। माँ से उद्घोषणा हुई अब मंत्रीजी परेड की सलामी लेंगे। खुली जीप में मंत्रीजी कलेक्टर जी, एस पी साहब सलामी के लिए निकले। पुलिस जवानों, स्काउट दलों ने उन्हें सलामी दी। बच्चों के स्कूली बैंड में शामिल भूमि, आध्या, अदविक प्रियांश, लक्ष, सानवी, श्रीनिका की शानदार धुन से सहाना मंत्रमुग्ध हो रही थी। बार बार ताली बजा रही थी। थोड़ी ही देर में स्कूली बच्चों के नृत्य शुरू हो गये। डांस देख सहाना भी दादा की गोदी में नाचने झूमने लगी। दादा ने सम्झाया बेटा तुम थोड़ी बड़ी हो जाओ तब तुम भी परेड ग्राऊंड में डांस करना।

सुंदर सुंदर मनमोहक झाँकियाँ जब विभागों की निकलने लगी। वन विभाग की झाँकी में भालू, जिराफ शेर खरगोश बंदर हाथी नाच रहे थे। सहाना इन्हें देख फिर ताली जोर जोर से बजाने लगी। सहाना ने पूछा -दादा क्या ये सुंदरवन से आए हैं। जहाँ बेटा ये तो मनोरंजन करने वाले लोग हैं। जिन्होंने हमारे मनोरंजन के लिए इनकी खाल पहनी है।

## माँ, माँ होती है

डॉ. श्यामबाबू शर्मा

वक्त हमारी मिलिक्यत नहीं होता दिन महीना और साल पर साल जैसे मुझे मैं समेटी गंगा की माटी वो है शुद्ध प्रबुद्ध और चेतन खाली पाटी साफ निर्मल मन जैसी हर्फ और हफों में छुपी इंसानियत कायनात से रूहानी प्रेम का सबक माँ महज शब्द नहीं होती।

घर, घर की दीवारें, दहलीज आँगन रसोई और पूजा घर दीया बाती अमरासन माँ को हेरते चौके में अब भूख नहीं लगती। जीत-हार, हार-जीत के प्यादे, मुहरे अपने पराये (इसे ऐसे ही पढ़ें) और कुछ पराये अपने औचक सचेत खुदगर्जों से माँ!

यकायक वह वक्त तुम्हारी सीख नफरतें नहीं सींचती। अनुग्रह अपने से इतर अपनों के लिए स्मृति की डायरी में दर्ज पलटते सफा और पशों के दरमियाँ वह ताकत वह वक्त नवंबर पलट जाती है इसकी खोफ इसकी टीस नहीं पलटती। हमारी आँखों ने हेरा खोजा हवा बताओ धरती बताओ पानी की आवाज बताये बता दे आग या कहे आसमान कहाँ समाया उसका आकार कैसी है उसकी सूरत धुंयें और राख में समाई माँ की सूरत पंच तत्वों में नहीं दिखती। कच्ची धूप कुहासे से ढकी वो तारीख अहसासों के फासलों में माँ, माँ होती है!

# जय-जय गणतंत्र

दादा मुझे भी इनसे मिलना है।

ठीक है सहाना। जब कार्यक्रम का समापन हो जायेगा तब हम इनसे मिल लेंगे।

अब बारी है प्रतिभाओं को पुरस्कृत करने की। अच्छे कायो के लिए विभागों के लोगों और बच्चों को पुरस्कृत किया जा रहा था। परेड ग्राऊंड में जिन बच्चों ने प्रदर्शन किया था उन्हें भी ट्राफी और प्रमाणपत्र देकर मंत्रीजी पुरस्कृत कर रहे थे।

सहाना अचानक दादा का नाम पुकारने पर चौंक सी गई। सहाना ने इशारे से दादा को मंच पर चलने के लिए इशारा किया। सहाना समझ गई थी दादा को भी कहानी कविता के लिए आज पुरस्कार मिलने वाला है। दादा सहाना को लेकर जब मंच पर गये। तालियों की गड़गड़हट से सहाना खुशी से झूम उठी। दादा को मिली ट्राफी और प्रमाणपत्र में से ट्राफी को अपने नन्हे हाथों से उठा लिया।

अब सहाना की नजर डाक्टर जय दादा पर जब पड़ी। टाटा टाटा उनसे करने लगी। जय दादा भी सहाना के पास आकर उसे प्यार करने लगे।

सहाना बोल पड़ी -डाक्टर दादा मैं भी जल्दी से बड़ी हो जाऊँ, मैं भी बच्चों के लिए छोटी छोटी कहानी कविता लिखूँगी। फिर तो मुझे भी ट्राफी मिलेगी ना।

हां सहाना! अभी तो तुम छोटी हो, बड़ी हो जाओ फिर दादा जैसा नाम कमाना।

जेब से मीठी मीठी टाफी देते हुए डाक्टर जय दादा ने सहाना के बालमन को समझाया और कहा सहाना अभी तो तुम ये छोटी टाफी ले लो फिर बड़ी बड़ी ट्राफी जीतकर हम सबका मान बढ़ाना।

सहाना जो से बोल पड़ी जय-जय गणतंत्र।

# लोक कला, कला और अनंत लोक की यात्रा

## कला

### पंकज तिवारी

कला समीक्षक



ग | इया के गोबरा लियाउब, अंगन लिपवाउब हो। ओंघा चउक पुरवाउब, त कुसन के असना लगाउब हो। हे रामा देवता मनाउब हो।

चौक पुरना के जैसे पता नहीं और कितने ही लोकपर्व हैं जिसके इतिहास, भूगोल का कोई ओर-छोर ही नहीं है पर इतना तो अवश्य है कि ये सभी हमारे रहन-सहन और व्यवहार में हमेशा से रहे हैं। धरा, धरा पर पलने वाले कण और कणों से निर्मित आकारों का आपसी तालमेल तो हमेशा से ही रहा है और यही सब चीजें धीरे-धीरे लोक में व्याप्त होती गई होंगी। लोक कला के बारे में कुछ भी कहने से पहले इतना तो अवश्य कहना है कि इसके समय और आगे-पीछे के बारे में बहुत ज्यादा जानकारी किसी को भी नहीं है। हॉ इतना अवश्य है जो चीजें आसान होती हैं, उसका प्रयोग ज्यादा होता है, उसकी उम्र बहुत ही अधिक होती है और ये सारी चीजें लिखित में चाहे जब आई रही होंगी पर जीवन में हमेशा से रही हैं। लोक कला में हमारे आसपास की वस्तुओं का भी महत्व बढ़ जाता है मसलन, गाय का गोबर, कुश, आम की टैरी, आदि। सभी को महत्व और सम्मानजनक स्थान के साथ देखा जाता है।

वेदों में भी.. अरं कृष्णन्तु वेदिं समग्निमिन्धतां पुरन् तत्रामृतस्य चेतनं यज्ञं ते तनवावहे।। (ऋ 01/170/04) हे ऋक्षिजो! तुम वेदी को धारण करो, उत्तम रीति से उसका निर्माण करो, अलंकृत करो एवं हमारे सामने अग्नि को प्रज्वलित करो, जलाओ। वहाँ अमरणधर्मा नित्य जीव को ज्ञान कराने वाले.. (ऋ01/170/04)। वेदी, साज-सज्जा, अलंकरण का जिक्र तो कब से

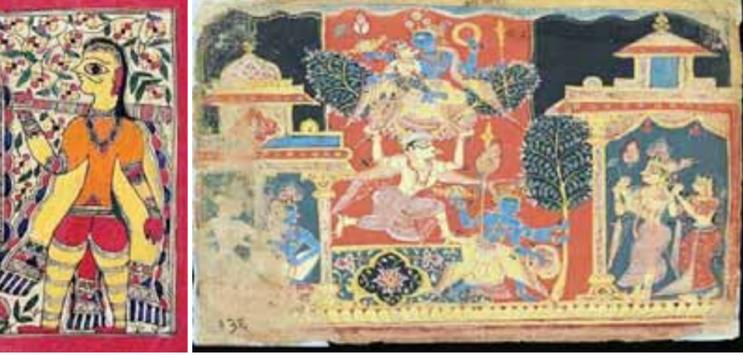
मिलता आया है, चौक जैसा कुछ यहाँ भी तो रहा ही होगा। वेदी के सजावट, अलंकरण, के पृष्ठभूमि को ध्यान से देखा जाए तो लोक के लक्षण वहाँ भी हैं। अपने देश में कला की बात सृष्टि के सृजन के समय या पूर्व यानि कि सृष्टि सृजन की जब भूमिका बन रही होगी तब से ही है। मनुष्य ही नहीं प्रकृति में जो स्वयं से ही कभी-कभी कुछ सृजित हो जाता है कला तो वहाँ भी है। बादलों का पल-पल पर रंग बदलना, भास्कर की वजह से वगुंधरा



पर पड़ रहे वृक्षों के छाया में समय के साथ परिवर्तन और आकृतियों का बदलना, समय के साथ, मौसम के साथ धरा के रूप और श्रृंगार में परिवर्तन मतलब उजाड़ से हरे-भरे, पीले-लाल फूलों से लद जाने और मनमोहन दृश्य का साक्षात् होना, क्या है आखिर? रंग-बिरंगी, धानी-परिधानी माहौल उत्सव की भांति नजर आता है और किसी भी उत्सव की कल्पना बिना कला मुमकिन नहीं है। अभीवृत्त कृशनेविंधरूपं हिरण्यशम्यं यजतो बृहन्तम् आस्थाद्रथं सविता चित्रभानु- कृष्णा रजांसि तविधिं दधानन्।। (ऋ 01/35/04)

यज्ञ के योग्य सविता एवं लोक में व्याप्त अंधकार को दूर करने वाली तेज किरणों का स्वर्ण सम बखान, सूर्य और पूरे वातावरण का बखान, प्रस्तुतिकरण प्राकृतिक सौंदर्य और कला के मर्म का बाकायदा में किया गया

प्रदर्शन है। बहुत समय पहले जब रहन-सहन जंगलों में रहा होगा, गुहा या गुफा में रहा होगा, दीवारों पर आंड़ी-तिरक्षी रेखाओं के रूप में ही सही पर कला तो रही ही होगी। अभी के खोजों में जिस भी समय का जिक्र हो रहा है उससे भी बहुत-बहुत पहले का अगर अनुमान लगाया जाय तो पता नहीं कितनी-कितनी सभ्यताओं की बात आंखों के सामने तैर जाती है और सभी सभ्यताओं के साथ कदम मिला कर चली है कला। क्या आज बिना



कला जीवन सम्भव है? नहीं है। तो कैसे संभव है कि उस समय के लोग बिना कला के जीवित रह सकते रहे होंगे?

मनुष्यों के खून में बसी है कला। जैसे खाने-पीने और पहनने हेतु भोजन सहित अन्य वस्तुओं की जरूरत होती है वैसे ही कला की भी जरूरत है और हमेशा रही है। बिना इसके जिंदगी में अंजोर नहीं बल्कि अंधेरा है। ध्यान लगाकर देखा जाए तो स्पष्ट हो जाएगा कि पहले अक्षर या शब्द नहीं बल्कि लकीर खींचने के प्रयास में एक बच्चा पत्थर, लकड़ी या कलम-दवात उठाता है। ये तो सिद्ध है कि पहले अक्षर नहीं बल्कि लकीर वजुद में आई होगी और यदि अक्षर भी वजुद में पहले रहा होगा तो वहाँ भी कला ही है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश जैसे जगहों से बहुत पहले से ही गुहा चित्रों के प्रमाण मिलने लगे थे।

लिखुनिया दरी तो इसका सबसे बड़ा प्रमाण है। वैदिक युग या और भी पहले के समय को समझें तो पाएंगे कि अब तक आखेट और लड़ाई झगड़ों के चित्रों से इतर बात मन के सुकून और आनंद तक पहुँच गई थी जो इसके पहले भी कई बार रही होगी पर उसका ज्ञान हमें आपको नहीं रहा होगा। हम आप किसी चीज की थाह नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं इसका मतलब उस चीज के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगा देना तो जायज नहीं होगा। हमारी नजर



है अथाह को थाह सके जरूरी तो नहीं है। चित्र जो दीवारों और धरती पर बनने तक पहुँच गये थे, जो आगे चलकर पूजा-प्रतिज्ञा तक पहुँच गये थे। जहाँ शुरू में देवी-देवता और यक्ष के चित्र, मूर्ति मूर्तन न होकर संकेतों में होते रहे थे, जहाँ वृत्त, त्रिकोण, चतुर्भुज जैसे लकीरों से पूजा-पाठ, परिक्रमा के काम आगे बढ़ाए जाते रहे हैं। लकीरों को खींचने हेतु गेरू, कोयला, खड़िया, जैसे और भी सामानों का प्रयोग हुआ है। रंगों हेतु आसानी से मिल जाने वाले चीजों के प्रयोग होते रहे थे। जिसमें रंग-रंग के दाने, हल्दी, कुंकुम, फूल-पत्ती, रंग-रंग के मिट्टियों का भी प्रयोग होता रहा था। ज्यामिति आकारों का प्रयोग अलग-अलग अर्थों के हिसाब से, अनुष्ठानों के हिसाब से उनके प्रयोगों पर जोर दिया जाता था ताकि पैसों के विशेष खर्च के बिना भी रीति रिवाजों को निभाया जा सके। तब घर

दुआर सजाने हेतु, उत्सव, त्योहार मनाने हेतु कैनवास और पेपर की जरूरत नहीं होती थी बल्कि जमीन और दीवार ही काफी थी। रंग-रंगेन से अपना घरे-दुआर, गाय-गोरू के सींगों, गोरुआरों आदि को रंगने परंपरा बनी रही। शुरू-शुरू में जिसकी शुरुआत बस सुंदरता बढ़ाने के लिए रही वो समय के साथ लोगों हेतु उनके जिंदगी का जरूरी हिस्सा बन गई और आगे चलकर परिवार संस्कार और त्योहार में बदल गई जिसका विकास पुस्त-दर-पुस्त, पीढ़ी-दर-पीढ़ी होती चली गई और पुरुष या महिला दोनों के साथ अपने अस्तित्व को बचाते हुए जुड़ गई। किसी भी शादी-ब्याह, तीज-त्योहार, पूजा-पाठ आदि में कुछ न कुछ चित्र बनाना जरूरी सा हो गया जहाँ अधिकांश महिलाएं घर के साज-सज्जा और चित्रकारी का जिम्मा अपने सिर उठा लीं और गजब की बात ये रही कि उन्हें आभास तक भी नहीं था कि कितनी बड़ी जिम्मेदारी के साथ वो आगे बढ़ रही थीं, अपने कला और संस्कृति को बचाते हुए आगे बढ़ रही थीं और उन्होंने कभी खुद को कलाकार भी नहीं माना।

यही साज-सज्जा आगे चलकर लोक कला के रूप में अपना स्थान बनाया। लोक शब्द को दो अर्थों में देखा जा सकता है पहला समाज और दूसरा जन साधारण या जन समुदाय से है। इनके सब के हाथों भेड़ी किंतु भाव से भरे चित्रों को भी लोक कला कहा जाता है। लोक कला में रीति-रिवाज, परंपरा आदि को बचा के रखने की शक्ति है। आम जन के मन से जुड़े रहने खातिर, बिना लिखे रूप में, बिना किसी तैयारी या साक्ष्य के, ये पूरे समृद्ध अवस्था में अगली पीढ़ी तक आसानी से पहुँच जाती हैं और अपने मूल रूप से पहुँच जाती हैं इसका बड़ा कारण, बड़ी विशेषता कलाकारों का अनाम रहना है। इस कला में थोड़ा- थोड़ा करके कई लोग कार्य करते हैं। इनसे से देखा जाए तो शास्त्रीय कला हेतु कला की और भी जानकारी होनी जरूरी होती है जबकि लोककला इन सभी से परे की चीज है। लोक कला सभी रीतों के साथ घुल-मिल कर अपने रूप में सभी के बीच रहते हुए हमेशा से यात्रा में रही है। कलाकृतियों को सुदूर-असुदूर जैसी बातें यहाँ नहीं होती हैं। चित्र गूगल से साभार है।

## लोकतंत्र के प्रति आस्था एवं विश्वास की समृद्धि का पर्व

### राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर विशेष

#### प्रमोद दीक्षित मलय

लेखक शिक्षक एवं शैक्षिक संवाद मंच के संस्थापक हैं।

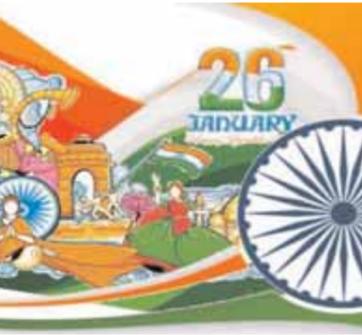


लो | क कल्याणकारी राज्य की अवधारणा में आम जन को आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति के समान अवसरों की उपलब्धता एवं क्रियाव्यवस्था को प्रमुखता दी गई है। शिक्षा, स्वास्थ्य एवं संस्कृति के विकास के लिए प्रत्येक नागरिक एवं समाज को स्वतंत्रता होती है। लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा भारत वर्ष के लिए नवल विचार नहीं है क्योंकि यहाँ राज व्यवस्था में यह चिंतन प्राचीन काल से ही प्रभावी रहा है। रामराज्य में प्रजा हर प्रकार से सुखी थी। रामायण में रामराज्य का वर्णन जन हितकारी राज्य का अद्भुत उदाहरण है। महाभारत के शान्तिपर्व में भी मृत्यु सैय्या पर लेटे भीष्म ने युधिष्ठिर को राजधर्मानुशासन का पाठ पढ़ते हुए जन सामान्य की सुख-सुविधाओं का ध्यान रखने का उपदेश दिया है तो विष्णुपुराण चाणक्य ने भी अपने राजनीति विषयक ग्रंथ अर्थशास्त्र में लोकहितैषी राजा के गुण एवं आदर्श का वर्णन किया है। वास्तव में लोक कल्याणकारी राज्य का पथ लोकतांत्रिक निर्वाचन प्रक्रिया की भूमि से ही गुजरता है। क्योंकि लोकतंत्र में तानाशाही और निरंकुश सत्ता अधिनायक के लिए कोई जगह नहीं होती। इस प्रणाली में जनता को लोक हितैषी प्रतिनिधि चुनने एवं लोक हितकारी शासन सत्ता स्थापित करने का अधिकार होता है। साथ ही अपेक्षानुरूप प्रदर्शन करने में अक्षम होने पर जनता सत्ता के परवर्तन करने का हक भी रखती है। और यह सम्भव होता है चुनाव अंतर्गत गोपनीय मतदान प्रक्रिया द्वारा, जिसका संचालन भारत निर्वाचन आयोग करता है। मतदान के प्रति जन जागरूकता एवं मतदाता भागीदारी बढ़ाने हेतु प्रत्येक वर्ष 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस वर्ष देश 16वाँ मतदाता दिवस मना रहा है।

लोकतंत्र के बारे में अब्राहम लिंकन का वह कथन प्रकाश स्तंभ बन चुका है जिसमें कहा गया है कि लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए जनता द्वारा चुनी गयी शासन प्रणाली है। यह प्रणाली तभी सार्थक सिद्ध होगी जब समाज लोकतांत्रिक प्रक्रिया से अवगत होते हुए मतदान की महत्ता को समझे। वह अपने एक वोट की प्रतिष्ठा एवं गुरुता तभी समझ सकेगा जब वह 17 अप्रैल, 1999 में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई की सरकार का एक वोट से गिर जाना समझ पायेगा। अतः मतदाताओं में मतदान करने के प्रति उत्साह जगा निर्भय होकर मतदान करने, मतदान केंद्रों के अधिकारिता क्षेत्र में 18 वर्ष की उम्र पूरी कर चुके युवक-युवतियों का पंजीकरण कर नये मतदाता बनाते हुए फोटोयुक्त मतदाता पहचान पत्र उपलब्ध कराने तथा प्रत्येक मतदान केंद्र एवं बूथ में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए 25 जनवरी को प्रति वर्ष राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया जाता है। समाज जागरण के लिए इस दिन विविध कार्यक्रमों का आयोजन सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं एवं संगठनों द्वारा किया जाता है। विविध क्षेत्रों के प्रतिष्ठित लोकप्रिय नायकों के मतदान करने सम्बंधी प्रेरक वाक्य एवं वीडियो संदेश, वृत्तचित्र एवं लघु फिल्म आदि का प्रसारण रेडियो एवं टेलीविजन पर किया जाता है। स्कूल, कालेज एवं विश्वविद्यालयों में वाद-विवाद प्रतियोगिता, निबंध लेखन, क्रिज काम्पटीशन, रंगोली, चित्रकारी एवं रेखांकन, भाषण एवं संगोष्ठियों का आयोजन करके मतदान के महत्व से जन सामान्य को परिचित कराते हुए अपने मत के उचित प्रयोग हेतु जागरूक किया जाता है।

लोकतंत्र के बारे में अब्राहम लिंकन का वह कथन प्रकाश स्तंभ बन चुका है जिसमें कहा गया है कि लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए जनता द्वारा चुनी गयी शासन प्रणाली है। यह प्रणाली तभी सार्थक सिद्ध होगी जब समाज लोकतांत्रिक प्रक्रिया से अवगत होते हुए मतदान की महत्ता को समझे। वह अपने एक वोट की प्रतिष्ठा एवं गुरुता तभी समझ सकेगा जब वह 17 अप्रैल, 1999 में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई की सरकार का एक वोट से गिर जाना समझ पायेगा। अतः मतदाताओं में मतदान करने के प्रति उत्साह जगा निर्भय होकर मतदान करने, मतदान केंद्रों के अधिकारिता क्षेत्र में 18 वर्ष की उम्र पूरी कर चुके युवक-युवतियों का पंजीकरण कर नये मतदाता बनाते हुए फोटोयुक्त मतदाता पहचान पत्र उपलब्ध कराने तथा प्रत्येक मतदान केंद्र एवं बूथ में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए 25 जनवरी को प्रति वर्ष राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया जाता है। समाज जागरण के लिए इस दिन विविध कार्यक्रमों का आयोजन सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं एवं संगठनों द्वारा किया जाता है।

शपथ भी दिलाई जाती है। मतदाता दिवस के आयोजन हेतु हर वर्ष एक थीम निर्धारित कर तदनुसार कार्यक्रम किये जाते हैं। 2025 में %मतदान जैसा कुछ नहीं, वोट जरूर डालेंगे% की थीम निर्धारित थी, जबकि इस वर्ष 2026 की थीम है - मेरा भारत, मेरा वोट; जो सामयिक एवं प्रेरक है। उल्लेखनीय है कि 25 जनवरी, 1950 को भारत निर्वाचन आयोग की स्थापना एक स्वायत्त संवैधानिक संस्था के रूप में की गयी थी। आयोग की 61वाँ वर्षगांठ के अवसर पर 25 जनवरी, 2011 को प्रथम राष्ट्रीय मतदाता दिवस का शुभारंभ तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा देवी पाटिल द्वारा किया गया था। तब से प्रत्येक वर्ष सम्पूर्ण देश



में इस दिवस को उत्सव की तरह मनाते हुए व्यापक स्तर पर विविध कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। ध्यातव्य है कि चुनाव आयोग के कार्यों में लोक सभा, राज्य सभा, विधान सभाओं सहित राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति के चुनाव करवाना शामिल है। सहयोग के लिए प्रत्येक प्रदेश में राज्य निर्वाचन आयोग भी गठित है जो विभिन्न पंचायतों एवं नगर निकायों आदि के चुनाव करता है। आयोग की इस 75 साल से अधिक की सांस्थानिक यात्रा में तमाम उतार चढ़ाव आये, अच्छे-बुरे अनुभवों से भी गुजरना हुआ। लेकिन चुनाव प्रक्रिया को निष्पक्ष, गतिशील, पारदर्शी, सर्व समावेशी, लोकतांत्रिक एवं न्यायपूर्ण बनाये रखने तथा बेहदती के लिए सतत साधनारत रहा है। इसीलिए आज हम आयोग के कार्यों में स्तरोन्नयन एवं गुणवत्तापूर्ण बदलाव महसूस कर पा रहे हैं। बहुसदस्यीय निर्वाचन क्षेत्र की जगह एकल सदस्यीय निर्वाचन बनाने, साधारण छपी हुई मतदाता सूची के स्थान पर कम्प्यूटरीकृत फोटो युक्त मतदाता सूची प्रकाशित करने, सचित्र मतदाता पहचान पत्र निर्गत करने तथा कागज के मतपत्र की जगह इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन से मतदान कराने तथा मतदाता द्वारा अपने मतदान को ईवीएम में डालने के बाद देखने हेतु विविध इलेक्ट्रॉनिक जैसे सुधारवादी कदम उठाये गये हैं। सनद रहे कि वर्ष 1982 में पहली बार केरल के पराचुर विधानसभा चुनाव में प्रयोग के तौर पर 50 केंद्रों पर ईवीएम का प्रयोग हुआ था। आयोग द्वारा मतदान प्रक्रिया को सरल करने तथा मतदान केंद्र मतदाता के निवास क्षेत्र के यथा सम्भव निकट

बनाने के सराहनीय प्रयास हुए हैं। मतपत्रों से मतदान प्रक्रिया के दौरान न केवल मतपत्र लूटने, बूथ कैम्पेयिंग, हत्या एवं लड़ाई-झगड़े की घटनाएं आम हुआ करती थीं बल्कि मतदानकर्मियों को भी डेर सारे मतपत्र एवं बैलेट बाक्स छेने पड़ते और मतपत्रों के पृष्ठ भाग में हस्ताक्षर-मोहर करने पड़ते थे जो मानसिक एवं शारीरिक रूप से थकान भरा काम होता था। तब प्रत्येक बूथ पर मतदाता संख्या भी अपेक्षाकृत अधिक हुआ करती थी। अब प्रत्येक बूथ पर मतदाताओं की संख्या कम करते हुए मतदान का समय भी बढ़ाया गया है जिसका सर्वाधिक लाभ बड़े हुए मतदान प्रतिशत के रूप में लगातार देखने को मिल रहा है।

आयोग ने प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह सुदूर दक्षिण में समुद्र तटीय एवं द्विपीय स्थान हों या लेह-लद्दाख, कारगिल एवं लाहौल स्पीति जैसे बर्फ की चादर ओढ़े रहने वाले हिमाचल काश्मीरी भू भाग, आंखों की दृष्टि की सीमा से आगे तक फैले रेगिस्तानी प्रदेश हों या फिर सेवन सिरस्टर्स के वनवासी रहवास, आयोग ऐसी प्रत्येक जगह मतदान केंद्र तैयार करने में सिद्ध हुआ है। स्मरणीय है कि हिमाचल प्रदेश के लाहौल स्पीति जिले का टशीगंग भारत ही नहीं बल्कि विश्व का सबसे ऊंचाई पर स्थित मतदान केंद्र है। यह समुद्र तल से 15256 फीट (4650 मीटर) की उंचाई पर चीनी सीमा से मात्र 10 किमी अंदर स्थित है, जहाँ गत लोकसभा निर्वाचन में केवल 49 मतदाता थे। ज्ञातव्य है कि यहाँ सांस लेने में भी परेशानी होती है।

एक संदर्भ देना समीचीन होगा कि आयोग के दसवें आयुक्त टी.एन. शेणन का छह वर्ष का कार्यकाल चुनाव सुधारों एवं आयोग के संवैधानिक नियमानुकूल सख्त रवैये के लिए जाना जाता है। शेणन ने ही मतदान के लिए मतदाता पहचान पत्र को अनिवार्य किया था और 1996 के चुनावों में पहली बार मतदाता पहचान पत्र का प्रयोग किया गया। कड़ाई से आचार संहिता लागू करने एवं प्रत्याशियों की खर्च सीमा तय करने का भी काम किया। मतदाताओं को अपने पक्ष में मतदान हेतु लुभाने के तमाम प्रलोभनों, प्रचार हेतु धर्म स्थलों के प्रयोग करने पर रोक लगाई। सही मायनों में आमजन तब पहली बार आयोग की शक्ति एवं समर्थ्य को समझ पाया था।

देश की सर्वोच्च शक्ति सविधान निर्देशित लोकतंत्र में निहित है और सुदृढ़ एवं समर्थ लोकतंत्र का आधार मतदाता है, जनता है। वास्तव में राष्ट्रीय मतदाता दिवस लोकतंत्र के प्रति आस्था एवं विश्वास की समृद्धि का पर्व है। कोउ नृप होय हमें का हानी के विरगोी भाव से मुक्त होकर प्रत्येक निर्वाचन में मतदाताओं की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित हो, हर काम छोड़कर पहले सपरिवार मतदान फिर जलपान का भाव प्रबल हो, स्वयं तो मतदान करें ही साथ ही मित्र, परिचित एवं पड़ोसियों को भी मतदान हेतु प्रेरित करने का सतत प्रयत्न हो, तभी मतदाता दिवस मनाने की सार्थकता सिद्ध होगी।

## टुकड़ों-टुकड़ों में बँटी कथा की अनगढ़ प्रस्तुति है : हैप्पी पटेल

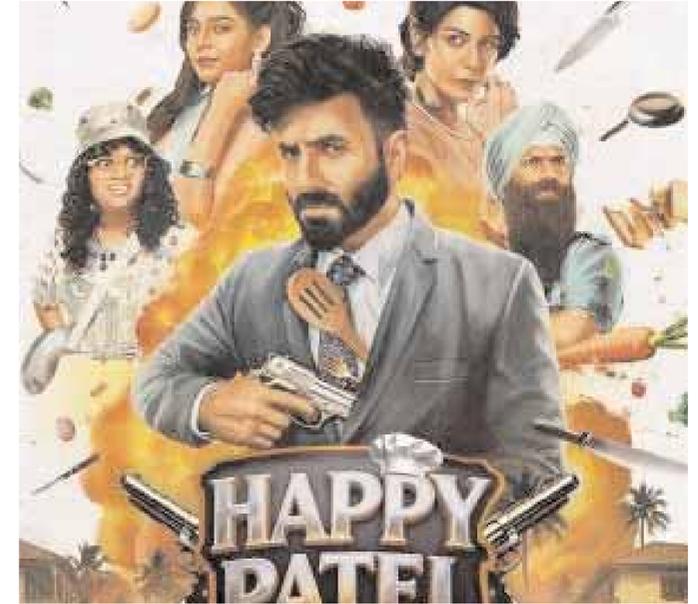


### फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे,

लेखक वेबसाइट ई-अंतर्वह के प्रबंध संचालक हैं।

कॉ | मेंडियन वीर दास ने आमिर खान की प्रोडक्शन कम्पनी के बैनर पर एक नई फिल्म बनाई है- हैप्पी पटेल- खतरनाक जासूस। फिल्म के शुरुआत में ही वर्ष 1991 के गोवा में गैंगस्टर जिम्मी (आमिर खान) और अन्य दो इंटरनेशनल ब्रिटिश एजेंट्स के बीच मुठभेड़ दिखाई गई है। इस मुठभेड़ में जिम्मी को गोली लग जाती है और एजेंट्स की जान बचाते हुए



उनकी काम वाली मर जाती है। काम वाली मरने से पहले दोनों ब्रिटिश एजेंट्स को अपना बच्चा हैप्पी सौंप जाती है, वहीं दूसरी तरफ जिम्मी अपने घर पहुँचकर अपनी बेटी के सामने मर जाता है।

कहानी इसके बाद आठ वर्ष आगे बढ़ जाती है और उसमें कई मोड़ आते हैं और वर्ष 2025 में हैप्पी ( वीर दास ) बड़ा होकर अपने एजेंट्स पिता जैसा बनना चाहता है पर उसका इंस्ट्रुट कुकिंग और डांसिंग में ज्यादा है। दूसरी तरफ जिम्मी की बेटी मामा ( मोना सिंह ) बड़ी होकर गोवा के एक इलाके की डॉन बन चुकी है। मामा अपने कई अवैध धंधों के बीच एक देसी फेयरनेस क्रीम भी मार्केट में उतारना चाहती है जिससे वह अंग्रेजों की फेयरनेस क्रीम को टक्कर दे सके। इस क्रीम को बनाने के लिए मामा ने एक अंग्रेज साइंटिस्ट को कैद कर रखा है, जिसे बचाने के मिशन पर खतरनाक जासूस हैप्पी पटेल,वापस गोवा आता है। इस मिशन में हैप्पी की मदद गोवा में उसका लोकल कोऑर्डिनेटर गीत (शारिब हाशमी), रॉकसी (सृष्टि तावडे) और डांसर रूपा (मिथिला पालकर) करते हैं। इसप्रकार कहानी कुल मिलाकर भानुमती के

कुनबे जुड़ने जैसी हो जाती है।

फिल्म की कहानी सुनने में तो अच्छी लगती है पर इसे देखते वक ऐसा लगता है जैसे कोई टुकड़ों में बेवजह ही आपको हँसाने का प्रयास कर रहा हो। हैप्पी बने वीर दास खुद को हिन्दी में कमजोर बताकर बार-बार द्विअर्थी शब्दों का इस्तेमाल करते हैं और यह अन्त तक जारी रहता है। कुछ सीन बेहतर हैं, एक-दो जगह हँसी भी आती है पर दो घण्टे की फिल्म में इतना काफी नहीं। फिल्म में थोड़ा सस्पेंस है, डेर सारा ड्रामा है और रोमांस भी है। कुल मिलाकर इसमें तर्क छोड़कर सब कुछ है। अभिनय का जहाँ तक सवाल है फिल्म के पहले सीन से लेकर आखिरी सीन तक सभी कलाकार ओवरएक्टिंग ही करते दिखते हैं। मैडकैप जोनर की इस फिल्म में कलाकारों से यही उम्मीद थी। आमिर खान बमुश्किल चार सीन के लिए हैं और उनकी ओवरएक्टिंग कतई बदरिस्त नहीं होती। वीर दास

कुछ सीन में बेहतर हैं पर उनका किरदार हैप्पी करने के बजाय दुखी करता है। मिथिला पालकर ने एक बार फिर अपना टैलेट जाया किया है। शारिब हाशमी ने ठीक-ठाक कॉमेडी की है। मोना सिंह से न तो उड़ लगता है और न ही उन्हें देखकर हँसी आती है। उनसे जिस तरह की उम्मीद थी, वैसे उनका किरदार बनाया ही नहीं गया। कुल मिलाकर अभिनय तब अच्छा होता जब कलाकारों को कुछ अर्थ करने के लिए दिया जाता।

वीर दास ने इस फिल्म से निर्देशक के रूप में पदार्पण किया है। अपने निर्देशन में उन्होंने कुछ अलग करने की कोशिश भी की? है। उन्होंने कुछ अच्छे कटाक्ष भी किये हैं पर कुल मिलाकर वो इस बात पर गौर करना भूल गए कि ये कहानी भेजा फ्राट कर रही है। न तो वो इसे - ' देली बेली बना पाए और न ही गो गोवा गोन। यह फिल्म भदे अन्दाज में अंग्रेजी बोलने वाली और द्विअर्थी वुलकुलों पर बिना दिमाग का इस्तेमाल किए हँसने वाले दर्शकों के लिए है। अगर आप खुद को वैसा पाते हैं तो यह फिल्म जाकर देखिए और बीच-बीच में आप हल्के सोशियो पॉलिटिकल कटाक्ष पर वाह-वाह करिये।

## मां नर्मदा प्रकटोत्सव पर विशेष

राजेश शर्मा  
सीनियर जर्नालिस्ट

## मां नर्मदा की सेवा में समर्पित एक सच्चे साधक-पर्यावरणविद् सचिन दवे

मां नर्मदा केवल एक नदी नहीं, बल्कि मध्य भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक आस्था का केंद्र है। देश के हृदय प्रदेश मध्यप्रदेश की जीवन रेखा अर्थात् लाइफ लाइन हैं। मां नर्मदा के मूल स्वरूप को संवारने और मां नर्मदा को प्रदूषण मुक्त करने के प्रयास में एक सच्चे साधक की भांति 22 वर्षों से तपस्यारत है पर्यावरणविद् सचिन दवे।

सचिन दवे 22 वर्षों तक अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में विभिन्न दायित्वों पर रहे तथा पिछले 26 वर्षों से शिक्षा और पर्यावरण क्षेत्र में सक्रिय हैं, वर्ष 2013 से मां नर्मदा के संरक्षण हेतु नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (NGT) में प्रभावी भूमिका निभाई है। पर्यावरणविद् दवे ने वर्ष 2013 में मां नर्मदा के संरक्षण के लिए संघर्ष के बजाय रचनात्मक, कानूनी और समाधान-आधारित मार्ग को अपनाया।

**मां नर्मदा अध्ययन यात्रा (2013)**  
अमरकंटक से भरूच तक (2158 किमी), 32 विद्यार्थियों का दल लेकर नर्मदा से जुड़ी वास्तविक समस्याओं का प्रत्यक्ष अध्ययन किया।

**अध्ययन के विषय-**  
जल व मृदा प्रदूषण, घाटों की स्थिति, बाढ़ प्रभाव, वन व जैव विविधता, विस्थापन, जनजातीय जीवन, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और बाँधों का पर्यावरणीय प्रभाव।

**ह्वज्ज में याचिका : तथ्य आधारित पहल**  
अध्ययन से प्राप्त ठोस तथ्यों के आधार पर नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (ह्वज्ज) में याचिका दायर की गई, जिसमें 48 पक्षकारों (केंद्र, राज्य,



नरवाई प्रबंधन के नाम पर बड़ा खेल, सरकार की मंशा पर लग रहा पलीता

## खेतों से मुफ्त बटोर रहे गन्ने की पत्तियां, भूमि को नहीं मिल पाएगी जैविक खाद

एस. के. द्विवेदी

बैतूल। एक तरफ सरकार खेतों में नरवाई जलाने पर पाबंदी लगाकर किसानों को फसल के अवशेष से जैविक खाद बनाने और भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन दे रही है, तो वहीं दूसरी ओर बैतूल जिले में एक कंपनी के द्वारा किसानों के खेतों से गन्ने की सूखी पत्तियां बटोरने का काम किया जा रहा है। इससे खेतों में सूखी पत्तियां ही शेष नहीं रहती हैं, जिससे न तो जैविक खाद बन पाएगी और न ही जमीन को उर्वरा शक्ति बढ़ेगी। उन्नत किसानों की मानें तो किसान नन्ने की सूखी पत्तियों को मल्ट्र की मदद से बारीक कर मिट्टी में मिला देते थे, जिससे वह सड़ने के बाद जैविक खाद में बदल जाती थी और किसानों को फसलों से बेहतर पैदावार मिल जाती थी। अब निजी कंपनी के द्वारा किसानों को मुफ्त में खेत साफ कर देने का लालच दिखाकर गन्ने की पत्तियों को बटोरकर बंडल बनाने का काम किया जा रहा है। कंपनी के द्वारा जिले के गन्ना उत्पादक क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर यह कार्य प्रारंभ किया गया है और जगह-जगह गन्ने की पत्तियों के बंडल जमा कर रहे गए हैं।

**बंडलों में आग लगने की हो रही घटनाएं** - पत्तियों के इन बंडलों में आग लगने की घटनाएँ भी होने लगी हैं। ताट दिवस मुलताई तहसील के ग्राम साईंखेड़ा में राहुल साहू के खेत में तथा गोलू मांकोड़े के घर के समीप रहे सूखी पत्तियों के बंडल में



आग लग गई। घटना को लेकर ग्रामीणों ने प्रशासन को शिकायत दर्ज कराई है। बताया जा रहा है गन्ने का कचरा कंपनी द्वारा स्टॉक किया गया था। हैरानी की बात है कि घटना के बाद कंपनी का कोई भी कर्मचारी मौके पर नहीं पहुंचा। आग इतनी तेजी से फैल रही थी कि आसपास के घरों और खेतों को नुकसान पहुंचाने का खतरा बन गया था। ग्रामीणों ने प्रशासन से मांग की है कि यदि कोई कंपनी, गांव या निजी भूमि पर ज्वलनशील कचरा या स्टॉक रखती है, तो उसकी सुरक्षा, निगरानी और नियमित निरीक्षण की पूरी जिम्मेदारी कंपनी की हो।

**शुगर मिल के प्रयास से सुधर रहे जमीनें** - जिले में गन्ना उत्पादक क्षेत्रों में शुगर मिलों के प्रबंधन की ओर से अनुदान पर गन्ने की सूखी पत्तियों को मल्ट्रिंग करने वाले उपकरण दिलाए गए हैं। वहीं किसानों को खेतों में आग लगाने की बजाय मल्ट्रिंग कराने पर शुगर मिलों के द्वारा किराए में 50 प्रतिशत की छूट भी दी जाती है। इसका ही

एक हेक्टेयर में बनती है पांच टन जैविक खाद- जिले में जैविक खेती कर गन्ने की फसल लगाने वाले किसानों का मानना है कि एक हेक्टेयर खेत से 8-10 टन सूखे पत्ते उपलब्ध होते हैं। इन्हें मल्ट्रिंग कर खेत की मिट्टी में मिलाने से 5 टन के करीब जैविक खाद प्राप्त होता है। इससे फसल में पोषक तत्वों की कमी नहीं होती है और पैदावार भी बढ़ती है। लेकिन कंपनी किसानों को उनके हित का लालच देकर खेतों से गन्ने की सूखी पत्तियां बटोरने का काम कर रही है। इससे खेतों में सूखी पत्तियां ही शेष नहीं रहती हैं, जिससे न तो जैविक खाद बन पा रही है और न ही जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी। जिससे किसानों को फसलों के उत्पादन के लिए अलग से खाद की व्यवस्था करनी पड़ेगी। जिसके लिए किसानों को आर्थिक खर्च भी करना पड़ेगा।

इन्का कहना है - हमारे द्वारा किसानों को नरवाई जलाने से रोकने के प्रयास किए जा रहे हैं। नरवाई जलाने से जहां प्रदूषण बढ़ता है, वहीं मिट्टी की उपजाऊ क्षमता पर भी असर पड़ता है। ऐसे किसान स्वच्छ से वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में गन्ने की पत्तियों का बेल बनवा सकते हैं। किसान की सहमति के प्रारंभ में मां सरस्वती के लिए ज्वादा बेहरार है, लेकिन सभी किसान ऐसा नहीं कर पाते हैं।

- आनंद बड़ोनीया, उपसंचालक, कृषि विभाग बैतूल

## बाल मन में राम 'को समर्पित नन्हे मुन्ने छात्रों ने किया उत्कृष्ट प्रदर्शन सरस्वती शिशु मंदिर परिसर में



हीरालाल गोलानी, सोहागपुर

सरस्वती शिशु मंदिर में शारीरिक प्रकटोत्सव एवं शिशु नगरी सांस्कृतिक कार्यक्रम 'बाल मन में राम' का आयोजन नगर पंचायत अध्यक्ष श्रीमती लता यशवंत पटेल, जिला शिक्षा अधिकारी एल. एन. प्रजापति, विभाग प्रचारक नरेन्द्र यादव, विभाग समन्वयक नर्मदापुरम सौरव उपाध्यक्ष, समाजसेवी कन्नू लाल अग्रवाल, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस शिक्षा समिति अध्यक्ष कृष्णा पालीवाल आदि के आतिथ्य में संपन्न हुआ कार्यक्रम के प्रारंभ में मां सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्वलित करके किया गया।

सरस्वती वंदना के उपरंत अतिथियों का स्वागत किया। व्यवस्थापक संजय दुबे ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। विभाग समन्वयक नर्मदापुरम विभाग सौरव उपाध्यय ने विद्या भारती के लक्ष्य से परिचित कराते हुए बच्चों के सर्वांगीण विकास पर जोर दिया। मातृशक्ति की भारी संख्या में उपस्थिति से गद्गद होकर अपने क्लह कि 5 से 10 वर्ष की आयु में बच्चों की इद्रियों का विकास तेजी से

होता है। बच्चों का मानसिक विकास जो उसकी मातृभाषा में सरलता से होता है। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए माताएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। माताएं अपने बच्चों को संस्कार पक्ष को मजबूत कर सकती हैं। बड़ों का सम्मान करना, मोबाइल का उपयोग कितना करना, पढ़ाई एवं अन्य गतिविधियों पर ध्यान देकर बच्चे के सर्वांगीण विकास में योगदान दे सकती हैं। विद्यालय द्वारा बच्चों के सर्वांगीण सर्वांगीण विकास के लिए कार्य किए जाते हैं। जिसमें आपके सहयोग की अपेक्षा की जाती है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम की बेला में सर्वप्रथम शारीरिक प्रकटोत्सव का कार्यक्रम रखा गया। योग व्यायाम की विभिन्न प्रस्तुतियां भैया बहनों ने की। बाल मन में राम भैया बहनों ने तालियों की गड़गड़ाहट के बीच कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। जिसमें द्वार युग, सतयुग, त्रेतायुग एवं कलयुग पर आधारित कार्यक्रम, सीता स्वयंवर, आजा अवध सजाएंगे। हनुमान जी की सेना चली, छम छम नाचे वीर हनुमान,

केसरी के लाल, सीता हरण, राम रावण युद्ध, लव कुश संवाद, मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरा मोती आदि विषय पर कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई।

इस अवसर पर नगर पंचायत परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि यशवंत पटेल, नगर परिषद उपाध्यक्ष आकाश खुवंशी, पार्षद आशीष विष्वककर्मा, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी राकेश कुमार उड्डेक, बीआरसी राकेश खुवंशी, प्राचार्य रामकिशोर दुबे, जनशिक्षक राजेश दीक्षित, भागवत जी, तिवारी जी, व्यवस्थापक संजीव दुबे, उपाध्यक्ष राजा भैया पटेल, सचिव देवराज पटेल, कोषाध्यक्ष अभिषेक जैन, समाजसेवी विशाल गोलानी, सौरभ सोनी, नीलेश खण्डेलवाल, नितिन सूर्यवंशी, रितेश सिंह, अभिषेक चौहान अभिभावकगण, गणमान्य नागरिक आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अंजली पुरोहित एवं रुचि दुबे ने किया। कार्यक्रम के अंत में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रस्तुति करने वाले भैया बहनों को पुरस्कार वितरण किए गए। आभार प्राचार्य अशोक कुमार दुबे ने व्यक्त किया।

## राष्ट्रीय मतदाता दिवस

डॉ अशोक कुमार भार्गव  
पूर्व आईएस, माॉडिेशनल स्पीकर

हमें गर्व है कि हम दुनिया के सबसे सशक्त, सफल, परिपक्व लोकतांत्रिक गणराज्य के नागरिक हैं। लोकतंत्र न केवल सर्वोत्तम शासन पद्धति है वरन एक शैली है जीवन यापन की, एक विधि और दर्शन है। इस व्यवस्था में स्वतंत्र निष्पक्ष एवं पारदर्शी चुनाव लोक आस्था, लोक निष्ठा के प्रतीक होते हैं। चुनाव लोकतंत्र की आत्मा है और मतदाता ही लोकतंत्र के भाग्य विधाता हैं। चुनाव के बिना लोकतंत्र और लोकतंत्र के बिना चुनाव दोनों अर्थहीन हो जाते हैं। भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पकार डॉ अबेडकर ने प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा का सम्मान करते हुए मतदान के अधिकार को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। भारतीय संविधान की सबसे बड़ी विलक्षणता ही यह है कि वह देश के प्रत्येक नागरिक को बिना किसी भेदभाव के न केवल वोट देने की ताकत देता है वरन प्रत्येक वोट का मूल्यवान भी समान करता है। यह ताकत प्रत्येक मतदाता का न केवल संवैधानिक अधिकार है वरन उसकी जिम्मेदारी भी और जिम्मेदारी सिर्फ ओढ़ने के लिए नहीं होती वरन निभाने के लिए होती है। जो मतदाता अपने नये मूल्यवान अधिकार का उपयोग नहीं करते वे न केवल लोकतंत्र की बुनियाद को कमजोर करते हैं वरन राष्ट्र के भविष्य के साथ खिलवाड़ भी करते हैं।

भारत में सन 1952 से निरंतर एक निश्चित समय अंतराल पर लोकसभा और विधानसभाओं के निर्वाचन संपन्न हो रहे हैं। चुनाव में मतदान का प्रतिशत है यद्यपि अपेक्षाकृत बड़ा है किंतु फिर भी एक बहुत बड़ा तबका अर्थात् 30व से 35व मतदाता आज भी %कोउ नृप होय हमें का हानी%की दूषित मानसिकता के चलते मतदान का प्रतिशत है यद्यपि अपेक्षाकृत बड़ा है किंतु फिर भी एक बहुत बड़ा तबका अर्थात् 30व से 35व मतदाता आज भी %कोउ नृप होय हमें का हानी%की दूषित मानसिकता के चलते मतदान के प्रति निष्क्रिय, उदासीन और विमुख है। वोट देने की ताकत राष्ट्र के विकास या विनाश की निर्णायक शक्ति होती है। अक्सर वोट न देने वाले मतदाता सरकार की नाकामी पर गरिब होते रहते हैं, तर्क, कुतर्क और वितर्क करते रहते हैं। ऐसे ही एक याचिकाकर्ता को आड़े हाथों लेते हुए सुप्रीम कोर्ट ने फटकार लगाई थी कि अगर आप वोट नहीं देते तो किसी काम के लिए आपके पास सरकार पर तोहमत लगाने का अधिकार भी नहीं है।

इसलिए समावेशी और सहभागी लोकतंत्र की बुनियाद को मजबूत करने के लिए नए मतदाताओं को प्रोत्साहित करना, उन्हें सुविधाएं देना, उनका नामांकन बढ़ाना, उन्हें सशक्त, सतर्क, सुरक्षित और वोट देने के अधिकार के प्रति जागरूक करना अपरिहार्य होता है।

भारत निर्वाचन आयोग ने मतदाताओं को सुव्यवस्थित शिक्षण हेतु कई सामान्य और लक्षित हस्तक्षेपों पर आधारित 360 डिग्री संचार का राइटव्यापी %स्वीप कार्यक्रम% वर्ष 2009 से प्रारंभ किया है। फल स्वरूप मतदान का प्रतिशत बढ़ा है, जेंडर गैप कम हुआ है, मतदान केंद्र पर हिंसा लुट और मतदान के बहिष्कार जैसी घटनाएं कम हुई हैं, नए युवा मतदाता शत प्रतिशत जुड़ रहे हैं, नामांकन बढ़ रहा है और सूचित, नैतिक, स्वतंत्र प्रोत्साहित वोटिंग प्रत्येक मतदान केंद्र पर बढ़ रही है। यह एक कटु सत्य

## वोट की ताकत हमारा संवैधानिक अधिकार

भारत में सन 1952 से निरंतर एक निश्चित समय अंतराल पर लोकसभा और विधानसभाओं के निर्वाचन संपन्न हो रहे हैं। चुनाव में मतदान का प्रतिशत है यद्यपि अपेक्षाकृत बड़ा है किंतु फिर भी एक बहुत बड़ा तबका अर्थात् 30व से 35व मतदाता आज भी %कोउ नृप होय हमें का हानी%की दूषित मानसिकता के चलते मतदान के प्रति निष्क्रिय, उदासीन और विमुख है। वोट देने की ताकत राष्ट्र के विकास या विनाश की निर्णायक शक्ति होती है। अक्सर वोट न देने वाले मतदाता सरकार की नाकामी पर गरिब होते रहते हैं, तर्क, कुतर्क और वितर्क करते रहते हैं। ऐसे ही एक याचिकाकर्ता को आड़े हाथों लेते हुए सुप्रीम कोर्ट ने फटकार लगाई थी कि अगर आप वोट नहीं देते तो किसी काम के लिए आपके पास सरकार पर तोहमत लगाने का अधिकार भी नहीं है।

भारत में सन 1952 से निरंतर एक निश्चित समय अंतराल पर लोकसभा और विधानसभाओं के निर्वाचन संपन्न हो रहे हैं। चुनाव में मतदान का प्रतिशत है यद्यपि अपेक्षाकृत बड़ा है किंतु फिर भी एक बहुत बड़ा तबका अर्थात् 30व से 35व मतदाता आज भी %कोउ नृप होय हमें का हानी%की दूषित मानसिकता के चलते मतदान के प्रति निष्क्रिय, उदासीन और विमुख है। वोट देने की ताकत राष्ट्र के विकास या विनाश की निर्णायक शक्ति होती है। अक्सर वोट न देने वाले मतदाता सरकार की नाकामी पर गरिब होते रहते हैं, तर्क, कुतर्क और वितर्क करते रहते हैं। ऐसे ही एक याचिकाकर्ता को आड़े हाथों लेते हुए सुप्रीम कोर्ट ने फटकार लगाई थी कि अगर आप वोट नहीं देते तो किसी काम के लिए आपके पास सरकार पर तोहमत लगाने का अधिकार भी नहीं है।

भारत में सन 1952 से निरंतर एक निश्चित समय अंतराल पर लोकसभा और विधानसभाओं के निर्वाचन संपन्न हो रहे हैं। चुनाव में मतदान का प्रतिशत है यद्यपि अपेक्षाकृत बड़ा है किंतु फिर भी एक बहुत बड़ा तबका अर्थात् 30व से 35व मतदाता आज भी %कोउ नृप होय हमें का हानी%की दूषित मानसिकता के चलते मतदान के प्रति निष्क्रिय, उदासीन और विमुख है। वोट देने की ताकत राष्ट्र के विकास या विनाश की निर्णायक शक्ति होती है। अक्सर वोट न देने वाले मतदाता सरकार की नाकामी पर गरिब होते रहते हैं, तर्क, कुतर्क और वितर्क करते रहते हैं। ऐसे ही एक याचिकाकर्ता को आड़े हाथों लेते हुए सुप्रीम कोर्ट ने फटकार लगाई थी कि अगर आप वोट नहीं देते तो किसी काम के लिए आपके पास सरकार पर तोहमत लगाने का अधिकार भी नहीं है।

है कि चुनाव का लोकतांत्रिक अनुष्ठान मतदाताओं के मतों की आहुतियों के बिना फलीभूत नहीं हो सकता क्योंकि लोकतंत्र का स्वरूप वैसा ही होता है जैसे उसके नियंत्रण होते हैं और लोकतंत्र में मतदाता ही लोकतंत्र के असली मालिक और नियंत्रण होते हैं। वे अपनी सरकार, अपने लिए, अपने ही द्वारा चुनते हैं। लोकतंत्र में एक मतदाता का अज्ञान भी सबकी सुरक्षा को संकट में डालने के लिए पर्याप्त होता है। क्योंकि %जम्हूरियत वह तर्जें हुकूमत है कि इसमें बंदों को तोला नहीं गिना करते हैं % अर्थात् एक-एक वोट महत्वपूर्ण होता है। एक-एक वोट से हार जीत होती है। यों तो लोकतंत्र में हम लोक कहलाना पसंद करते हैं किंतु तंत्र का हिस्सा नहीं बनते। अतः संविधान प्रदत्त वोट डालने के अपने मूल्यवान अधिकार का हर संभव परिस्थितियों में उपयोग करना चाहिए।

%हम भारत के लोग% भाग्यशाली हैं कि हमें 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान के लागू होते ही सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार की अनुपम सौगत बिना किसी संघर्ष के प्राप्त हो गई। जबकि, वैश्विक स्तर पर इसे प्राप्त करने का इतिहास आंदोलनों, प्रदर्शनों और संघर्षपूर्ण अभियानों का रहा है। 19वीं सदी के प्रारंभ में लोकतंत्र के लिए होने वाले संघर्ष प्रायः राजनीतिक समानता, आजादी और न्याय जैसे मानवीय मूल्यों को लेकर ही होते थे किंतु सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार की मांग प्रमुख होती होती थी। यूरोप के अधिकांश देश जो लोकतांत्रिक व्यवस्था को अपनाते जा रहे थे वह भी सभी लोगों को वोट देने की अनुमति नहीं देते थे। कुछ देशों में केवल उन्हीं लोगों को वोट देने का अधिकार था जिनके पास संपत्ति थी या वे बड़े जमींदार, सामंत अथवा पादरी थे। महिलाओं के साथ भेदभाव होता था और वोट देने का अधिकार मिलता ही नहीं था। संयुक्त राज्य अमेरिका में अश्वेतों को 1965 तक मतदान का अधिकार नहीं मिला। कई देशों में मताधिकार को प्राप्त करने के लिए

साक्षरता की परीक्षा उत्तीर्ण करना अनिवार्य होता था। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान महिलाओं ने कारखाने और अन्य क्षेत्रों में अपनी निर्णायक भूमिका से राष्ट्र की अर्थव्यवस्था और युद्ध के प्रयासों में महत्वपूर्ण योगदान दिया था जिससे यह धारणा विकसित हुई कि महिलाओं को वोट देने का अधिकार मिलना ही चाहिए। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र ने भी महिलाओं के मताधिकार को प्रोत्साहित किया। 1950



के बाद धीरे-धीरे अर्जेंटीना, मलेशिया, दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, यूनान, स्पेन आदि देशों के नागरिकों को सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार प्राप्त हुए।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में चुनाव संबंधी बड़े रोचक तथ्य भी %इस्टिड्यूट ऑफ़ डेमोक्रेसी एंड इलेक्टोरल असिस्टेंट% के प्रतिवेदन में मिलते हैं। विश्व के अनेक देशों जैसे बेल्लिजियम, स्विट्जरलैंड, ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर, अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया और बोलीविया आदि देशों में मतदान करना अनिवार्य है। भारत सहित फिलीपींस, थाईलैंड जैसे देशों में मतदान करना केवल नागरिक कर्तव्य है बाध्यता नहीं। जबकि कई

देश ऐसे हैं जहां इस कर्तव्य के पालन न करने पर सजा का प्रावधान है। मतदान की अनिवार्यता लागू करने वाले देशों में से 19 ऐसे देश हैं जहां इस नियम को तोड़ने पर सजा भी दी जाती है। जिन देशों में मतदान अनिवार्य है वहां 70 वर्ष से अधिक आयु के लोगों के लिए यह बाध्यता नहीं है। आस्ट्रेलिया, ब्राजील जैसे देशों में मतदान न करने पर अनुपस्थिति का कारण सहित औचित्य प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना होता है। अर्जेंटीना में तो पुलिस के पास इस बात का प्रमाण पत्र जमा करना होता है कि मतदान के दिन आप वास्तव में कहाँ थे। पेरू और ग्रीस जैसे देशों में मतदान न करने वाले व्यक्ति को सार्वजनिक सेवाओं से बर्चित कर दिया जाता है। बोलीविया में वोट न देने वाले का तीन माह का वेतन तक रोक दिया जाता है। भारत में यद्यपि मतदान संवैधानिक कर्तव्य है बाध्यता नहीं किंतु फिर भी यह हमारा मूल्यवान लोकतांत्रिक कर्तव्य है।

वैसे तो चुनाव की चुनौती व्यक्ति के जीवन में हर क्षण उपस्थित रहती है। बाजार से फल, गहने, कपड़े, अन्य वस्तु, सब्जी भाजी या मिट्टी का घड़ा ही क्यों न खरीदना हो अथवा वैवाहिक रिश्ता तय करना हो तब हम बहुत ठोक बजाकर सम्यक चुनाव करते हैं। जब हम अपने जीवन के निर्णय बहुत सोच समझ कर लेते हैं तब हमें इतने बड़े राष्ट्र की बागडोर जिन्हें सौंप रहे हैं उन्हें चुनते वक बिना किसी जाति धर्म भेद किए, वोटों के महा ठगों के मायावी वादों, लालच, प्रलोभन आदि से निर्लिप्त रहकर दूध का दूध और पानी का पानी करते हुए विवेक सम्मत मतदान करना चाहिए। हमें ऐसे श्रेष्ठ जन प्रतिनिधि चुनने चाहिए जो वास्तव में नैतिक मूल्यों राष्ट्रीय आदर्शों, सदाचार, ईमानदारी, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रभक्ति की उदात्त चेतना के पोषक हों। क्योंकि, भारतीय चुनावों का महात्त्व किसी महाकुंभ से कम नहीं होता। ये केवल बहुयी, बहुआयामी, भव्य और विराट ही नहीं होते वरन चुनौतीपूर्ण भी होते हैं जिसकी इंद्रधनुषी छटाओं में हमारी जीवटता, उम्मीदें और उत्साह के साथ ही हमारी भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषायी, जातिगत विविधता और जन-जन की आकांक्षाओं का स्वर्णिम भविष्य भी दिखाई देता है। इसलिए सारे काम छोड़ दो सबसे पहले वोट दो।



# ‘बिग बॉस’ की रनर अप बनने का किरसा

रियलिटी शो ‘बिग बॉस-19’ की कंटेस्टेंट फरहाना भट्ट इस बार फिनाले के मंच पर गौरव खन्ना के साथ पहुंची थी, लेकिन जीत नहीं सकी। उनके यहां तक पहुंचने पर दर्शकों को आश्चर्य भी हुआ। क्योंकि, शो में उनका काम सिवाय झगड़े और विवाद करने के और कुछ नहीं रहा। इसके बावजूद उनका अंतिम दो कंटेस्टेंट में पहुंचने ने दर्शकों चौंकाया भी। अब ये राज खुला कि फरहाना रनर अप के काबिल नहीं थी, उन्हें तो जबरन यहां तक लाया गया था।

बिग बॉस-19’ मेकर्स के साथ फरहाना भट्ट के रिश्ते का पर्दाफाश हो गया। रनर-अप रहने फरहाना भट्ट के बारे में चौंकाने वाला दावा किया जा रहा है। उन्हें एक शख्स ने उन्हें एक्सपोज किया। साथ ही कई फोटो और वीडियो इंटरनेट पर वायरल हो रहे हैं, जिसमें वह बिग बॉस क्रिएटिव टीम के सदस्यों के साथ नजर आ रही हैं और इससे उनकी दोस्ती के बारे में जानकर लोग उनकी आलोचना कर रहे हैं। साथ ही शो के एक कंटेस्टेंट बशीर अली के एक्स्ट्रेस के लिए भी फरहाना की टीम को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है।



फरहाना की टीम का बयान- फरहाना की टीम ‘यंग फिल्मिस्तान’ ने इस पर प्रतिक्रिया देते हुए एक बयान जारी किया है, जिसमें बताया गया कि एक फैन से एक



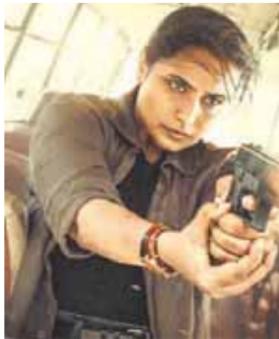
कर्मचारी बनने तक, मदद

कर्मचारी बनने तक, मदद मंगाने से लेकर मुंबई आने और फरजाना भट्ट के लिए पीआर के तौर पर काम करने और उनको सपोर्ट करने तक, इस इंसान पर फरहाना और उसकी पूरी टीम ने भरोसा किया। उसका साथ दिया और कई मौके भी दिए। उस भरोसे का बदला इसने धोखा देकर चुकाया है।

पूर्व कर्मचारी का आरोप- यश ने कई स्क्रीनशॉट्स शेयर किए, जिनमें कथित तौर पर बताया था कि ‘बिग बॉस’ की क्रिएटिव टीम में मौजूद फरहाना के दोस्तों ने ऑनलाइन उनके फेब्रुअरी में माहौल बनाया। जिससे उन्हें रनर-अप बनने का मौका मिला। एक्स कर्मचारी यश ने ये भी दावा किया कि आदिल सईद नाम का शख्स ‘बिग बॉस’ की क्रिएटिव टीम में था। इसलिए वह कैमरे के सामने आने पर मास्क लगा लेते और चेहरा छिपाता था। यश के मुताबिक, आदिल एक्स्ट्रेस की टीम ‘यंग फिल्मिस्तान’ के ओनर भी हैं। पूर्व कर्मचारी ने आगे ये भी आरोप लगाया कि एक्स्ट्रेस और उनकी टीम उनका बकाया नहीं चुका पाई। वह सोशल मीडिया मैनेजर और पीआर एक्सपर्ट के तौर पर काम करते थे। हालांकि इन आरोपों पर फरहाना का कोई बयान नहीं आया है।

## ‘मर्दानी-3’ का नया ट्रैक, याद आई ‘बब्बर शेरनी’

यश राज फिल्म्स की रानी मुखर्जी की फिल्म मर्दानी-3 इसी महीने 30 जनवरी को रिलीज होने वाली है। इस फिल्म की तीसरी किस्त में रानी फिर दमदार, निडर और जांबाज पुलिस अधिकारी शिवानी शिवाजी रॉय के रूप में वापसी कर रही हैं। वे एक क्रूर सामाजिक अपराध के खिलाफ मोर्चा संभालती नजर आएंगी। 93 पलटा लड़कियों को बचाने की इस कहानी को लेकर दर्शकों में उत्सुकता है।



इस बीच यश राज फिल्म्स ने एक नया गीत रिलीज किया, जो रानी मुखर्जी की पावर-पैक मौजूदगी का जश्न मनाता है। ‘बब्बर शेरनी’ शीर्षक से आया यह गीत शिवानी की प्रभावशाली आभा को और मजबूत करता है। इस गीत को सार्थक कल्याणी ने कपोज, प्रोड्यूसर और अरेंज किया और बोल श्रुति शुक्ला ने लिखे हैं। गीत के बारे में रानी मुखर्जी ने कहा कि ‘बब्बर शेरनी’ फिल्म की आत्मा का एक सशक्त रूप है। यह मर्दानी की अडिग भावना को पूरी ताकत के साथ दर्शाता है और हमारे समाज की महिलाओं को ‘बब्बर शेरनी’ के रूप में सम्मानित करता है। यह गीत कच्ची सच्चाई, दृढ़ संकल्प और अडिग साहस से भरा हुआ है ठीक वैसे ही जैसे शिवानी शिवाजी रॉय का व्यक्तित्व। ‘बब्बर शेरनी’ एक महिला की ताकत, उसके संकल्प और समाज में बदलाव लाने की उसकी जिद को सलाम है। न्याय की अडिग भावना से प्रेरित यह गीत उनकी निडरता और फौलादी इरादों को दर्शाता है और उन तमाम महिलाओं का उत्सव मनाता है जो मुश्किल हालात में भी पीछे हटने से इनकार करती हैं।

## नए टीवी शो ‘द 50’ शो में क्या कुछ खास

चिंत रियलिटी शो ‘द 50’ का एक नया प्रेमो जारी किया गया है। इसमें इस आलीशान घर का कोना-कोना दिखाया गया है, जहां पर शो के 50 कंटेस्टेंट्स आकर रहेंगे। इसमें कायदे-कानून भी बनाए गए हैं। साथ ही ये भी खुलासा किया गया है कि अहम भूमिका लायन की ही रहेगी। ‘द 50’ के नए प्रेमो की शुरुआत आलीशान महल से होती है, जो बेहद क्लरफूल है और काफी एंटीक चीजों से सजाया गया है। इंटीरियर काफी लुभाने वाला है। बैकग्राउंड में लायन की आवाज आती है, ‘यहां का बस एक ही नियम होगा कि यहां कोई नियम नहीं होगा।’ इस शो के दो रंग होंगे- एक झूठा और एक हंगामा। साथ ही एक कोर्टयार्ड होगा, जहां पर टास्क होगा, और वहां तय होगा कि कौन रहेगा और कौन बाहर जाएगा। बिग बॉस की तरह, इस शो में लायन कंटेस्टेंट्स को कंट्रोल करेगा। और सभी पर नजर रखेगा। इसके अलावा, लायन की एक छद्म (गुफा) भी होगा, जहां कंटेस्टेंट्स के बीच फेस-ऑफ होगा और उससे गेम में नया आयाम जुड़ेगा। हालांकि इसका होस्ट फराह खान हैं या फिर अजय देवगन, इस पर अभी भी संशय बना हुआ है। शो के कंटेस्टेंट्स की बात करें तो अभी तक जिनके नाम सामने आए हैं, उसमें रिद्धि डोगरा, उरशी डेलकिया, शाइनी दोशी, दुष्यंत कुकरेजा, मोनालिसा और विक्रांत, दिव्या अग्रवाल, फैसल शेख, करण पटेल शामिल हैं। इनके अलावा कंटेस्टेंट क्रिएटर दुष्यंत कुकरेजा, अभिनेता-मॉडल रुद्र राणा, सिलिब्रिटी इंटरव्यूअर अहमद अल मरजूकी की भी चर्चा है। ये 1 फरवरी से जियो हॉटस्टार पर रात 9 बजे और कलर्स टीवी पर रात 10:30 बजे प्रसारित किया जाएगा।



## रियल बॉक्स

# संविधान, लोकतंत्र, राष्ट्र प्रेम और हिंदी सिनेमा

### हेमंत पाल

लेखक ‘सुबह सुबहे’ इंदौर के स्थानीय संपादक हैं।



गणतंत्र दिवस भारत का वह पर्व है, जब 1950 में संविधान लागू हुआ और देश ने पूर्ण संप्रभुता प्राप्त की। यह दिवस हिंदी सिनेमा का प्रिय विषय रहा है, जो संविधान, लोकतंत्र और राष्ट्र प्रेम को जोड़ता है। ये फिल्में न केवल मनोरंजन देती हैं, बल्कि सामाजिक जागरूकता भी पैदा करती हैं। हिंदी सिनेमा ने इस थीम को देशभक्ति फिल्मों के माध्यम से जीवंत किया, जहां युद्ध, स्वतंत्रता संग्राम और संवैधानिक न्याय की कहानियां युवाओं को प्रेरित करती हैं। इन फिल्मों के कथानक दर्शाते हैं कि फिल्म इंडस्ट्री ने गणतंत्र दिवस को राष्ट्रीय एकता के प्रतीक रूप में कैसे स्थापित किया। ये फिल्में गणतंत्र दिवस को केवल छुट्टी का दिन नहीं, बल्कि संवैधानिक जागरूकता का माध्यम बनाती हैं। इन फिल्मों ने सैन्य वीरता से लेकर सामाजिक न्याय तक, हिंदी सिनेमा के राष्ट्र प्रेम को जीवंत रखा। दर्शक इसके माध्यम से कर्तव्य पालन की प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं। ऐसी फिल्में सिर्फ उपदेश के जरिए राष्ट्र प्रेम की बातें नहीं करती, बल्कि इनके कथानक इतने सशक्त रहे कि फिल्म देखते हुए दर्शकों के रोंगटे खड़े हो गए।

जेपी दत्ता की फिल्म ‘बॉर्डर’ सीमा पर बलिदान की गाथा वाली कहानी है। 1971 के भारत-पाक युद्ध की लगेवाला लड़ाई पर आधारित है, जहां 120 सैनिकों ने 2000 पाकिस्तानी टैंकों का मुकाबला किया। सनी देओल का मेजर कुलदीप सिंह चंद्रपुरी का किरदार सैनिकों की वीरता का प्रतीक है, जबकि सुनील शेट्टी और अश्वय खन्ना जैसे कलाकार सहयोगी भूमिकाओं में जान डालते हैं। फिल्म का संगीत, खासकर ‘संदेशे आते हैं’ भावुकता जगाता है। फिल्म यह सच भी सामने आता है, कि ‘बॉर्डर’ युद्ध की क्रूरता दिखाते हुए सैनिकों के पारिवारिक बलिदान को उजागर करती है। गणतंत्र दिवस के संदर्भ में यह संविधान द्वारा प्रदत्त राष्ट्रीय सुरक्षा के कर्तव्य को रेखांकित करती है। बॉलीवुड ने पहली बार इतने बड़े कैम्पास पर वास्तविक घटना को चित्रित किया, जिससे दर्शकों में देशभक्ति की लहर दौड़ी। फिल्म की कमजोरी रोमांस का अतिरिक्त डेज है, लेकिन इसका प्रभाव आज भी बरकरार है। यह युद्ध की भयानकता दिखाते हुए सैनिकों के त्याग को उजागर करती है, जिससे दर्शक में राष्ट्रप्रेम जागृत हो। गणतंत्र दिवस पर यह फिल्म सशस्त्र बलों के संवैधानिक कर्तव्य को याद दिलाती है।

2006 में आयी फिल्म ‘रंग दे बसंती’ युवाओं के क्रांतिकारी जागरण का प्रतीक है। रकेश ओमप्रकाश मेहरा की यह फिल्म 26 जनवरी 2006 को रिलीज हुई, जो स्वतंत्रता संग्राम के नायकों को आधुनिक युवाओं से जोड़ती है। आमिर खान, सिद्धार्थ, शरमन जोशी और रब्बू जैसे कलाकार ब्रिटिश काल के भगत सिंह और चंदेशेखर आजाद से प्रेरित होकर भ्रष्टाचार के खिलाफ हथियार उठाते हैं। सृजन (अल्लो जे लहानी) का डॉक्यूमेंट्री बनाना

कथानक का टर्निंग पॉइंट है। फिल्म संविधान के मौलिक अधिकारों (अनुच्छेद 19-21) की रक्षा का आह्वान करती है, जहां निष्क्रिय नागरिकता से सक्रिय प्रतिरोध की ओर बढ़ाव है। ‘रंग दे बसंती’ ने युवाओं को वोटिंग और सामाजिक मुद्दों पर जागरूक किया। इसका क्लाइमैक्स, जहां युवा मंत्री की हत्या करते हैं, नैतिक दुविधा पैदा करता है। लेकिन, राष्ट्र प्रेम को प्राथमिकता देता है। गणतंत्र दिवस थीम की यह फिल्म संविधान के मौलिक अधिकारों की रक्षा का संदेश देती है, युवाओं को कर्तव्यनिष्ठ बनाते हुए।

लगान (2001) वास्तव में एकता का सामूहिक संग्राम है। ब्रिटिश काल में किसानों की क्रिकेट से आजादी की लड़ाई दिखाती है। आशुतोष गोवारीकर के निर्देशन में बनी यह फिल्म गांव की एकता को संविधान पूर्व की आजादी की भावना से जोड़ती है। पता चलता है कि यह सामाजिक समानता और सामूहिक संघर्ष पर जोर देती है, जो गणतंत्र दिवस के

सामाजिक सुधार की प्रेरणा देती हुई। सयानी गुप्ता और कुमुद मिश्रा सहायक भूमिकाओं में हैं। फिल्म संविधान के अनुच्छेद 15 (भेदभाव निषेध) पर केंद्रित है। विश्लेषण बताता है कि यह कास्ट सिस्टम की जड़ों को कुदरती है, वह भी प्रशासनिक भ्रष्टाचार उजागर करते हुए। गणतंत्र दिवस पर समानता के सिद्धांत को भी पुनर्जीवित करती है। क्लाइमैक्स में न्याय की जीत वास्तव में प्रेरणादायक है।

आदित्य सुहास जांभले निर्देशित ‘आर्टिकल 370’ यामी गौतम की भूमिका में कश्मीर के विशेष दर्जे को समाप्त करने की घटना पर आधारित है। फिल्म भ्रष्टाचार और अत्यागवादा के खिलाफ राष्ट्रीय एकता दिखाती है। विश्लेषण बताता है कि यह संविधान की एकात्मकता को मजबूत करने वाली पॉलिटिकल थ्रिलर है, जो गणतंत्र दिवस के संप्रभुता थीम से जुड़ती है। क्लाइमैक्स में शांतिपूर्ण निरस्तीकरण राष्ट्रीय अखंडता का संदेश देता है। शेखर कपूर की डॉक्यू-ड्रामा सीरीज ‘संविधान: द



लोकतांत्रिक मूल्यों से मेल खाता है। फिल्म में 1893 के चंपारन गांव का कथानक है, जहां भुवन (आमिर खान) ब्रिटिश कानून रसेल के टैक्स से क्रिकेट मैच द्वारा मुक्ति दिलाता है। ग्रेसी (रेचेल शेफर) और एलिजाबेथ (सुप्रिया पाठक) जैसे सहयोगी सामाजिक एकता दिखाते हैं। फिल्म का संगीत एआर रहमान कालजयी है। विश्लेषण में यह संविधान पूर्व की स्वतंत्रता भावना को प्रतिबिंबित करती है, जहां रम्यान कालजयी है। विश्लेषण में यह संविधान पूर्व की स्वतंत्रता भावना को प्रतिबिंबित करती है, जहां जाति-धर्म भूलकर हिंदू-मुस्लिम एकजुट होते हैं। गणतंत्र दिवस थीम में ‘लगान’ एकता और अखंडता को मजबूत करती है। इस फिल्म की कमजोरी लंबाई है, लेकिन ऑस्कर नामिनेशन ने इसे वैश्विक बनाया। यह दर्शाती है कि कमजोर भी संगठित होकर साम्राज्यवाद हरा सकता है।

‘आर्टिकल 15’ (2019) जाति के विरुद्ध न्याय युद्ध का उद्घोष करती है। अनुभव सिन्हा की यह फिल्म उत्तर प्रदेश के लालगांव में आईपीएस अधिकारी अयान रंजन (आयुमान खुराना) की दलित लड़कियों के अपराध की जांच पर आधारित है। संविधान के अनुच्छेद 15 पर आधारित यह फिल्म अस्पृश्यता और असमानता को चुनौती देती है। यह फिल्म दर्शाती है, कि लोकतंत्र में न्यायाधिकार का अर्थ प्रशासन कैसे संवैधानिक अधिकार सुनिश्चित करते हैं। गणतंत्र दिवस पर यह फिल्म समानता के सिद्धांत को मजबूत करती है और

मैकिंग ऑफ द कॉन्स्टिट्यूशन’ (2014) संविधान निर्माण की कहानी है, जो इस बहस को जीवंत करती है। यह फिल्म डॉ बीआर अम्बेडकर और अन्य नेताओं के योगदान को दिखाती है। यह गणतंत्र दिवस का मूल स्रोत स्पष्ट करती है, विविधता को एकता में बदलने की प्रक्रिया उजागर करते हुए। यह श्रृंखला संवैधानिक लोकतंत्र की नींव समझाती है। 2007 में आई शाहरुख खान की ‘चक दे इंडिया’ महिला हॉकी टीम की विश्व कप विजय की कहानी है। शिमित अमीन की फिल्म में शाहरुख खान कोच कबीर खान के रूप में 16 लड़कियों की हॉकी टीम को विश्व कप दिलाते हैं। यह फिल्म क्षेत्रीय विभेदों को पार कर एकजुटता दिखाती है, जो संविधान की प्रस्तावना से प्रेरित है। विश्लेषण में कोच कबीर खान का किरदार राष्ट्र निर्माण का प्रतीक बनाता है। गणतंत्र दिवस पर यह खेले के माध्यम से समान अवसरों का संदेश देती है। ऐसे ही खेल आधारित फिल्म ‘भाग मिल्खा भाग’ (2013) में व्यक्तिगत संघर्ष से राष्ट्रीय गौरव की थीम है। रकेश ओमप्रकाश मेहरा की यह फिल्म धावक मिल्खा सिंह के जीवन पर बनी है। फरहान अख्तर का अभिनय विभाजन के दर्द से ओलंपिक सफलता तक ले जाता है। यह फिल्म देश निष्ठा और आत्मविश्वास को गणतंत्र मूल्यों से जोड़ती है। फिल्म प्रेरणा देती है कि कठिनाइयों से लक्ष्य प्राप्ति संभव है।

- hemantpal60@gmail.com / 9755499919

## ‘होमबाउंड’ ऑस्कर की दौड़ से बाहर आई

करण जोहर की फिल्म ‘होमबाउंड’ ऑस्कर अवार्डों में शॉर्टलिस्ट हुई थी। 22 जनवरी को ऑस्कर के नामिनेशन हुए, लेकिन होमबाउंड इन नामिनेशन में जगह नहीं बना पाई। ‘होमबाउंड’ ऑस्कर की रेंस से बाहर हो गई। फिल्म के प्रोड्यूसर करण जोहर और एक्टर विशाल जेटवा ने इसे लेकर प्रतिक्रिया व्यक्त की। करण ने लिखा ‘गर्व, लव यू नीरज घायवान इस जर्नी का हिस्सा बनाने के लिए।’ करण की इस पोस्ट पर नीरज ने भी रिप्लाइ किया। उन्होंने लिखा ‘थैंक्यू करण जोहर, आप बहुत मजबूत सहारा रहे। आपके बिना यहां तक नहीं पहुंच सकते थे।’



‘होमबाउंड’ बेस्ट इंटरनेशनल फीचर फिल्म कैटेगरी में शॉर्टलिस्ट हुई थी। अब इस कैटेगरी में ब्राजील की द सीक्रेट एजेंट, फ्रांस की इट

वॉज जस्ट एन एक्सिडेंट, नॉर्वे की सेंटीमेंट वैल्यू, स्पेन की ‘सिराट’ और ट्यूनीशिया की ‘द वॉक्स ऑफ हिंद राजवं’ नामिनेट हुई हैं। विशाल जेटवा ने कहा कि भले ही होमबाउंड नामिनेशन में न पहुंची हो। लेकिन, ये शॉर्टलिस्ट हुई, ये ही अपने आप में सम्मान की बात है। ‘होमबाउंड’ का यहां तक आना और ग्लोबली इंडिया को रिप्रजेंट करना अपने आप में स्पेशल है। मैं बहुत आभारी हूँ इस फिल्म का हिस्सा बनकर। फिल्म को नीरज घायवान ने डायरेक्ट किया है। करण जोहर ने फिल्म को प्रोड्यूस किया। फिल्म में ईशान खट्टर, विशाल जेटवा और जाह्नवी कपूर लीडरोल में थे।



भारतीय संविधान संभवतया विश्व का एकमात्र संविधान है जिस पर जब जो चाहे उंगली उठा सकता है। अभी तक तो राजनेता संविधान की प्रतियां लहरा लहरा कर इसे संकट में बता रहे थे। लेकिन, अब वंदे फिल्मकारों ने भी अपनी घटती मांग को लेकर



संविधान की मूल भावना को कटघरे में खड़ा कर दिया है। हाल ही में संगीतकार एआर रहमान ने कहा कि उन्हें काम न मिलने का कारण साम्प्रदायिक है। ये पहली बार नहीं हुआ, पहले भी कुछ अभिनेता ऐसे आरोप लगा चुके हैं। लेकिन, इस बात का जवाब भी बॉलीवुड में ही मौजूद है।

हाल ही में ऑस्कर अवार्ड से सम्मानित संगीतकार एआर रहमान ने यह कहकर संविधान में समानता की मूल भावना पर प्रश्नचिह्न लगाए का प्रयास किया है कि साम्प्रदायिकता वैमनस्यता के चलते उन्हें बॉलीवुड में काम मिलना कम हो गया है। ऐसे में सवाल पैदा होता है कि ऐसा कहकर वह किसे कटघरे में खड़ा करना चाहते हैं। देखा जाए तो बॉलीवुड आज भी वही है और एआर रहमान भी वही। जिस समय रहमान को बॉलीवुड में धड़ाधड़ काम मिल रहा था तब भी बॉलीवुड वही था और आज जब उन्हें बॉलीवुड में उनके अनुसार काम के लाले पड़े हैं, तब भी बॉलीवुड वही है। बदली है तो सिर्फ सरकारों। तो क्या इसका अर्थ यह लगाया जाए कि एआर रहमान अप्रत्यक्ष रूप से सरकार को कटघरे में खड़ा कर यह कहना चाह रहे हैं कि सरकार की वजह से उन्हें बॉलीवुड में काम नहीं मिल रहा!

ऐसा नहीं है कि इन दिनों केवल एआर रहमान को ही बॉलीवुड ने अछूत घोषित किया और उन्हें काम से वंचित किया जा रहा है। यदि उनका मानना है कि उनके मुसलमान होने के कारण उन्हें बॉलीवुड में काम नहीं मिल रहा है, तो आनंद मिलिंद, जतीन ललित, अभिजीत, कुमार शानु, शान और सोनू निगम जिन्हें भी काम नहीं मिल रहा है वह किस पर आरोप लगाएँ! इनमें सोनू निगम तो थोर हिन्दुवादी हैं और अजान से निकलने वाली आवाज के खिलाफ आवाज उठा चुके हैं। इस

लिहाज से तो उन्हें हर दूसरी फिल्म में गीत गाने का मौका दिया जाता चाहिए था। लेकिन, स्थिति ऐसी नहीं है। आज देश और महाराष्ट्र में हिंदू समर्थक सरकारें हैं। इसके बावजूद सोनू तक को काम के लाले पड़ रहे हैं। ऐसे में रहमान का यह आरोप लगाना कि साम्प्रदायिकता वैमनस्य के चलते उन्हें काम नहीं मिल रहा है तर्कहीन उतरता है।



ऐसा भी नहीं है कि एआर रहमान का संगीत जिन दिनों बॉलीवुड में परवान चढ़ रहा था और उनकी झोली ऑफरों से लबावल हो रही थी तब बॉलीवुड में हिन्दू विरोधी या मुस्लिम परसत लॉबी सक्रिय थी। उनकी सफलता फिल्म में चाहे वह ‘बाबू’ हो चाहे ‘ताल’ उनके निर्माता कोई मुस्लिम नहीं बल्कि हिन्दू थे। उन्हें जिस गीत ‘जय हो’ के लिए ऑस्कर मिला उसमें केवल संगीतकार के नाम पर केवल वही मुस्लिम थे। उनको छोड़कर चाहे वह गीतकार गुलजार हो चाहे गायक सुखविंदर सिंह हो सभी हिंदू थे। मजे की बात तो यह है कि ‘जय हो’ को तैयार करने के लिए संगीतकार एआर रहमान ने सिर्फ तीन वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया था। दुनिया का दस्तूर है कि जब सफलता का सूरज सिर पर होता है तो तैयार इसके लिए अपनी पीठ थपथपाते हैं लेकिन जब सफलता का सूर्यास्त होने लगता है वह इसके लिए दूसरों को जिम्मेदार ठहराने लगता है। मुस्लिम कलाकारों के बीच यह एक फैशन भी बन गई है कि वह अपनी असफलता के लिए साम्प्रदायिकता को सामने खड़ा कर विवाद की स्थिति बना देते हैं। ऐसा

नहीं है कि इस रविवार का श्रीगणेश रहमान ने ही किया है। उनके पहले जॉनी वॉकर और महमूद भी इस तरह के आरोप लगा चुके हैं कि साम्प्रदायिकता के चलते उन्हें हाशिए पर डाला गया है। क्रिकेट में पूर्व कप्तान अजहरुद्दीन भी इस तरह का आरोप लगा चुके हैं। फिल्मों जगत पर इस तरह का आरोप लगाने वाले शायद यह भूल जाते हैं कि जिस देश में 80% हिन्दू हैं वहां यदि कोई मुस्लिम फिल्मकार चाहे वह अभिनेता, अभिनेत्री या गायक, गीतकार या संगीतकार सफल है तो उसके लिए वह 80% दर्शक ही जिम्मेदार हैं जिन्हें देखने वाले दर्शक हिन्दू धर्म को मानते हैं।

अपनी बेरोजगारी पर साम्प्रदायिकता का मुलामा चढ़ाने वाले रहमान यह क्यों भूल जाते हैं कि इसी तथाकथित साम्प्रदायिक वैमनस्य के माहौल में बॉलीवुड में सलमान खान, आमिर खान, और शाहरुख खान जैसी त्रिमूर्ति सफलता के सातवें आसमान पर हैं। जिस माहौल को अपनी बेरोजगारी के लिए रहमान जिम्मेदार ठहरा रहे हैं वह तोनीं खान भी तो उसी माहौल



में काम कर रहे हैं। जब उनके लिए यह स्थिति निर्मित नहीं हुई तो केवल रहमान के लिए साम्प्रदायिकता ने ऐसी स्थिति क्यों निर्मित की! हकीकत तो यह है कि यदि देश में कहीं संविधान और समानता को सम्मान हासिल है तो

वह फिल्मोस्तान ही है जहां सभी धर्मों का सम्मान किया जाता है और फिल्म निर्माण में सभी धर्म सभी अर्ग के फिल्मकार योगदान देते हैं। जो लोग फिल्मों जगत में साम्प्रदायिकता का आरोप लगाते हैं उन्हें मुल्ले आजम, अनारकली, मेरे महबूब, मेरे हुजूर, ताजमहल, निनाह, चौदहवीं का चाँद जैसी फिल्मों की सफलता पर गौर करना चाहिए। यह सभी फिल्में मुस्लिम पृष्ठभूमि पर थीं। यदि यहां साम्प्रदायिक वैमनस्य का माहौल होता तो यह फिल्में कभी सफल ही नहीं होतीं।

यदि फिल्मिस्तान में साम्प्रदायिकता का माहौल होता तो यहां कभी हिन्दू कलाकार गुलजार, अनजान, कमर जलालाबादी जैसा नाम नहीं रखते और न ही युसूफ खान को दिलीप और महजबी को मोना कुमारी का नाम नहीं मिलता। यदि यहां साम्प्रदायिकता का माहौल होता तो यहां कभी भी मधुबाला, मुमताज, नर्गिस जैसी अभिनेत्रियों का चोटी पर पहुंचने का मौका ही नहीं मिलता। जो फिल्में दुनिया में साम्प्रदायिकता का रोगा रोते हैं उनके मारामरुच्छ जैसे आसुओं को पीछे के लिए केवल ही फिल्म शोले का उदाहरण ही पर्याप्त होगा जिसके निर्माता जो कांपी रिपों और निर्देशक रमेश सलीम पंजाबी हैं। तो लेखक द्वय सलीम-जावेद मुसलमान। फिल्म के एक नायक धर्मेन्द्र पंजाबी हैं तो दूसरे नायक अमिताभ बच्चन उत्तर भारत के शुद्ध हिन्दी भाषी कायस्थ।

फिल्म में उल्हास की जबरदस्त भूमिका करने वाले संजीव कुमार गुजराल थे, तो गब्बर अमजद खान

मुस्लिम पठान। जिस फिल्म की पहली नायिका हेमा मालिनी मद्रासी है, तो जया भादुड़ी ममता बनर्जी की तरह बंगाली है। फिल्म में अरसानी और मैकमोहन सिंधी थे तो जयदीप मुसलमान, सविन पिलाविकर महाराष्ट्र का मराठी भाषी है तो मौसी लीला मिश्रा ठेट ब्रजभाषी हैं। विजू खोटे मराठी, एकेश शंभू सिन्धी, सत्येन कपूर



पंजाबी हैं। जलाल आगा उर्दू भाषी है तो हेलेन बर्मा से भारत आयी प्रवासी हैं। फिल्म के गीत पंजाबी आनंद बक्षी ने लिखे हैं तो उन्हें संगीत में सिरने बाले रहुवन देव बर्मन बंगाली थे जो मूलतः त्रिपुरा से आए थे। गांनों को आवाज देने वाले मरामरुच्छ जैसे आसुओं को पीछे के लिए केवल ही फिल्म शोले का उदाहरण ही पर्याप्त होगा जिसके निर्माता जो कांपी रिपों और निर्देशक रमेश सलीम पंजाबी हैं। तो लेखक द्वय सलीम-जावेद मुसलमान। फिल्म के एक नायक धर्मेन्द्र पंजाबी हैं तो दूसरे नायक अमिताभ बच्चन उत्तर भारत के शुद्ध हिन्दी भाषी कायस्थ। फिल्म में उल्हास की जबरदस्त भूमिका करने वाले संजीव कुमार गुजराल थे, तो गब्बर अमजद खान

77<sup>वें</sup>  
गणतंत्र  
दिवस  
26<sup>वाँ</sup>  
JANUARY  
की  
हार्दिक शुभकामनाएं



बालक छात्रावास, कछावदा  
विकास खंड तिरला (धार)

77<sup>वें</sup>  
26<sup>वाँ</sup>  
गणतंत्र दिवस  
की हार्दिक शुभकामनाएं

राजा भोज महाविद्यालयीन  
छात्रावास, धार  
(जनजातीय कार्य विभाग धार द्वारा संचालित)

राजा भोज महाविद्यालयीन  
छात्रावास, धार  
(जनजातीय कार्य विभाग धार द्वारा संचालित)

77<sup>वें</sup> गणतंत्र दिवस  
की  
हार्दिक शुभकामनाएं

कार्यालय महाप्रबंधक, जिला उद्योग केंद्र, पीथमपुर

77<sup>वें</sup>  
गणतंत्र  
दिवस  
26<sup>वाँ</sup>  
JANUARY  
की  
हार्दिक शुभकामनाएं

कार्यालय जिला खाद्य आपूर्ति अधिकारी  
खाद्य आपूर्ति विभाग, धार

77<sup>वें</sup>  
गणतंत्र दिवस  
की  
हार्दिक शुभकामनाएं

बालक छात्रावास, चाकल्या  
विकास खंड तिरला (धार)

77<sup>वें</sup>  
गणतंत्र दिवस  
की हार्दिक  
शुभकामनाएं

बालक छात्रावास,  
खेड़ी विकास खंड  
तिरला, (धार)

77<sup>वें</sup>  
26<sup>वाँ</sup>  
गणतंत्र दिवस  
की हार्दिक शुभकामनाएं

कार्यालय जिला पंचायत, धार

श्री अश्विनेक चौधरी (आईएएस)  
मुख्य कार्यपालक अधिकारी,  
जिला पंचायत, धार

श्री सरदार सिंह मेड़ा  
अध्यक्ष  
जिला पंचायत, धार

श्रीमती संगीता हेमसिंह पटेल  
उपाध्यक्ष  
जिला पंचायत, धार

77<sup>वें</sup>  
गणतंत्र दिवस  
की  
हार्दिक शुभकामनाएं

देश भक्ति  
जन सेवा  
जिला पुलिस परिवार, धार

77<sup>वें</sup> गणतंत्र दिवस  
की हार्दिक  
शुभकामनाएं

शासकीय महाविद्यालयीन  
अजजा बालक छात्रावास  
धार

77<sup>वें</sup>  
26<sup>वाँ</sup>  
गणतंत्र दिवस  
की हार्दिक शुभकामनाएं

कार्यालय  
पुलिस थाना प्रभारी  
पुलिस थाना, राजगढ़

77<sup>वें</sup>  
26<sup>वाँ</sup>  
गणतंत्र दिवस  
की हार्दिक शुभकामनाएं

जूनियर अजा बालक छात्रावास, धार

77<sup>वें</sup>  
गणतंत्र दिवस  
की हार्दिक  
शुभकामनाएं

कार्यालय रक्षित निरीक्षक, डीआरपी लाईन, धार

77<sup>वें</sup>  
गणतंत्र दिवस  
की  
हार्दिक शुभकामनाएं

संयुक्त सीनियर बालक छात्रावास, धार